

राज

कामिक्स
विशेषांक

संख्या 2555 मूल्य 90.00

इग्न किंग

सर्वनायक वर्ष 2014



विश्वरक्षक
नामराज

Anupam Sinha
Eashwar Arta

उसका जीवित पैदा हो पाना एक चमत्कार था। उसका बड़ा हो पाना एक चमत्कार था।

पर क्या वह इतना बड़ा हो पाया कि अपने अतीत को बौना कर सके?

बेपर्दा कर सके जुपिटर सर्कस से जुड़े
उन काले रहस्यों को जो फिर से अदृश्य
मौत बन कर उसके सिर पर मंडरा रहे हैं।



क्योंकि वे हैं वहशी और निर्मम।

सुपर कमांडो

ध्रुव

सुपर कमांडो
ध्रुव

Join our facebook page

facebook

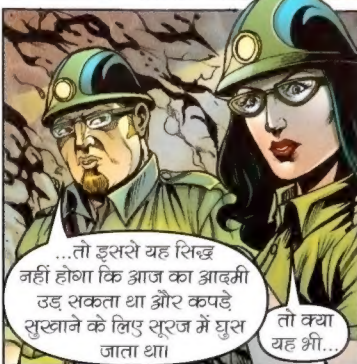
<http://www.facebook.com/rajgupta>

यह है सुपर कमांडो ध्रुव के होने का मंच जो आज से पहले किसी ने नहीं जाना, खुद ध्रुव ने भी नहीं!

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रृंखलाओं में से एक!

पूर्व कैम्ब्रियन युग में बनी यह श्रृंखला पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति और विकास की गवाह भी है...

...और कई रहस्यों की राजदार भी!





सोना नुस्खा ऐसा कल है!

सना कॉमिक्स है ऐसा मनुष्य!

ड्रैगन किंग

कथा एंव चित्र: अनुपम सिन्हा

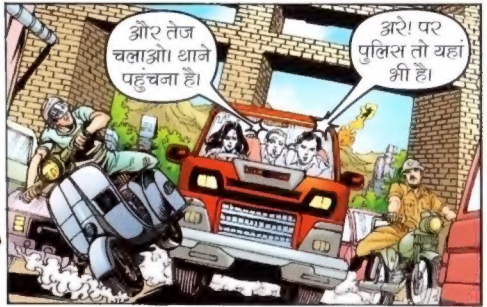
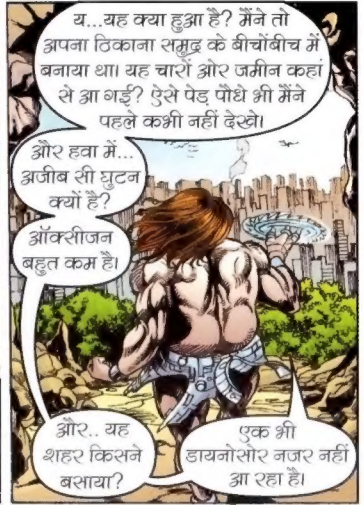
ईकिंग: विनोद कुमार

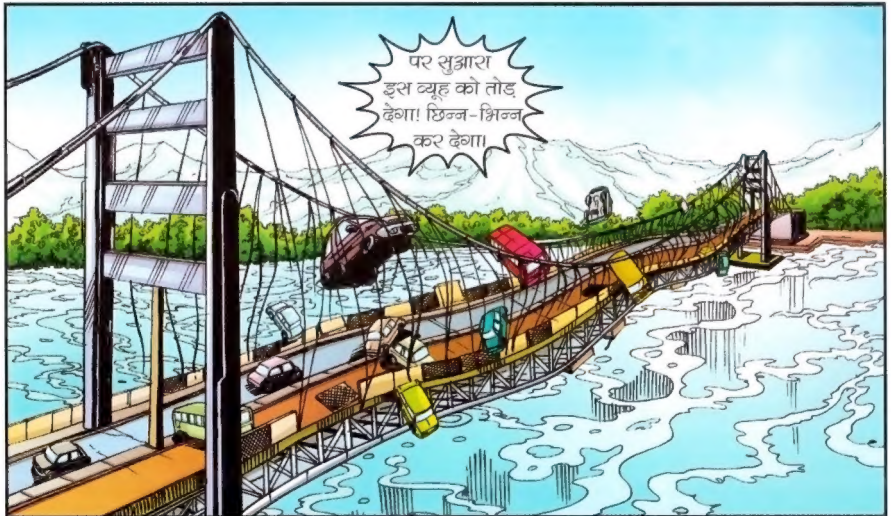
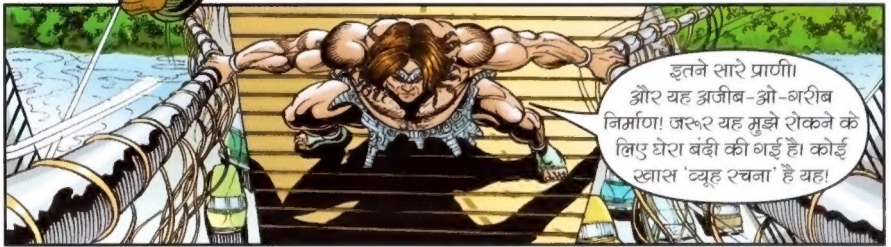
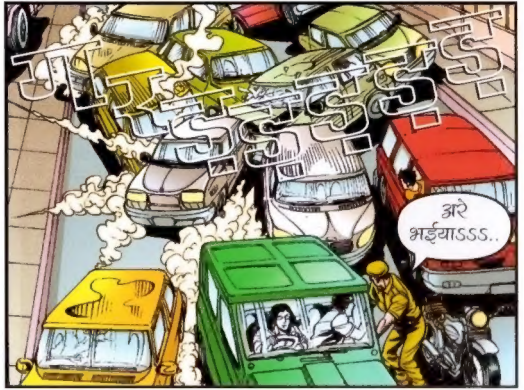
ईएचएस: बसंत पंडा

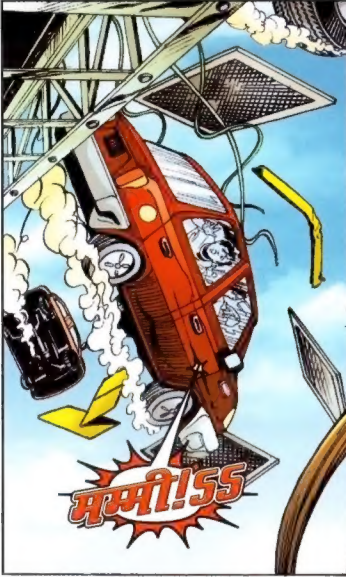
कैलीग्राफी: वीर, रंकार

संपादक: मनीष गुप्ता

संस्थापक: राजकुमार गुप्ता, मनोज गुप्ता

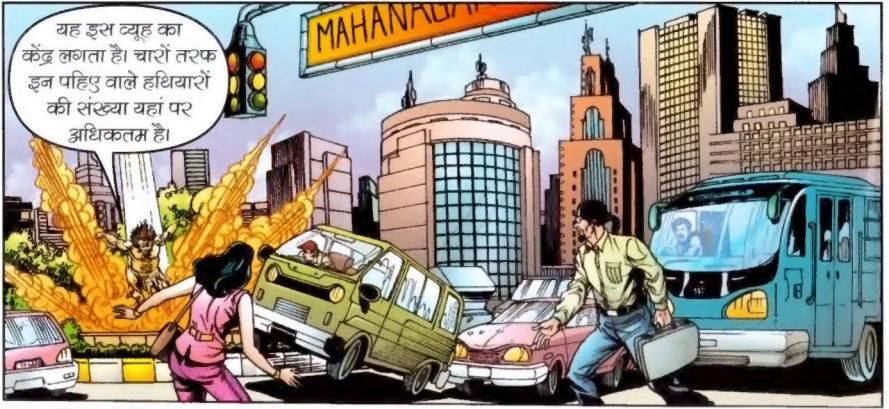


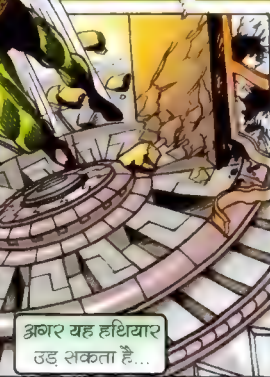
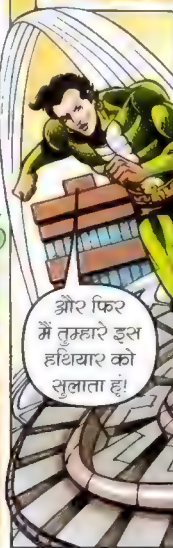
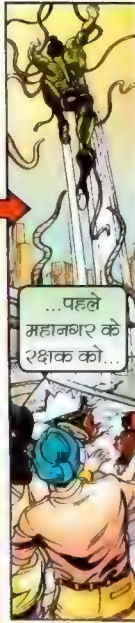
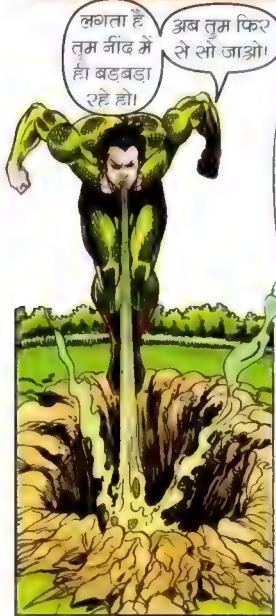
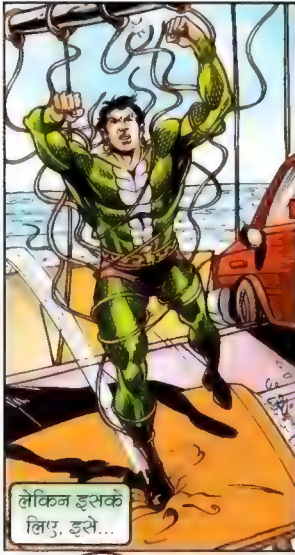


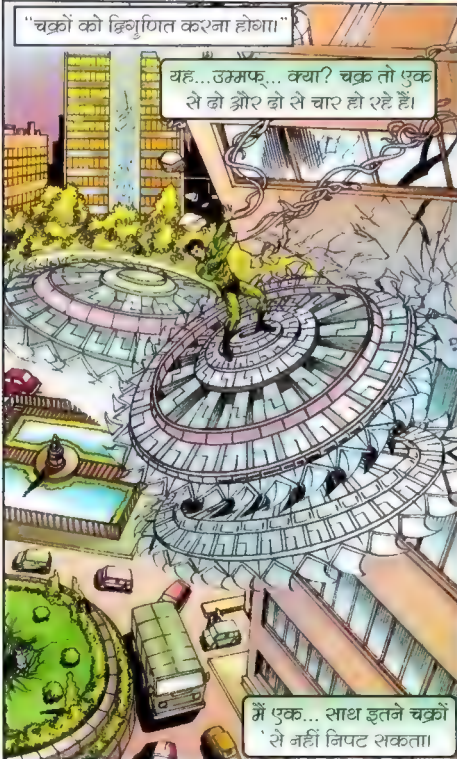


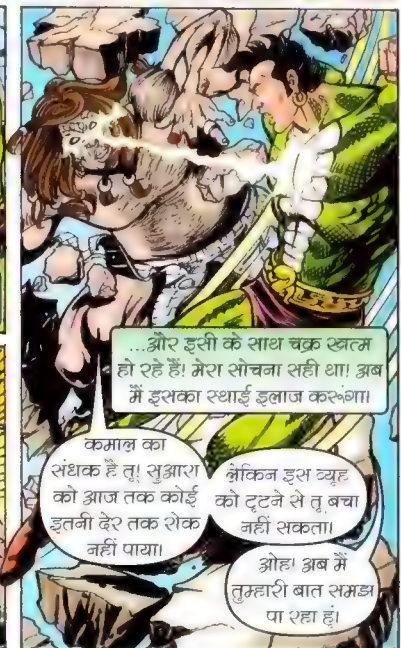
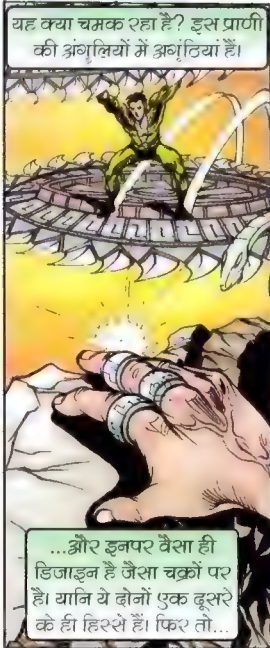
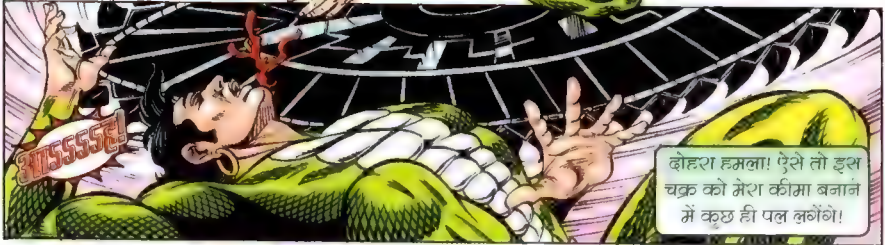


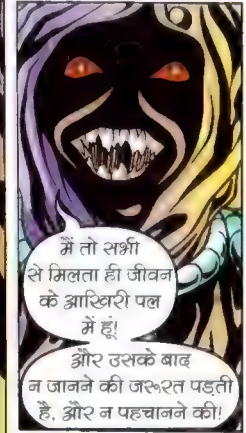
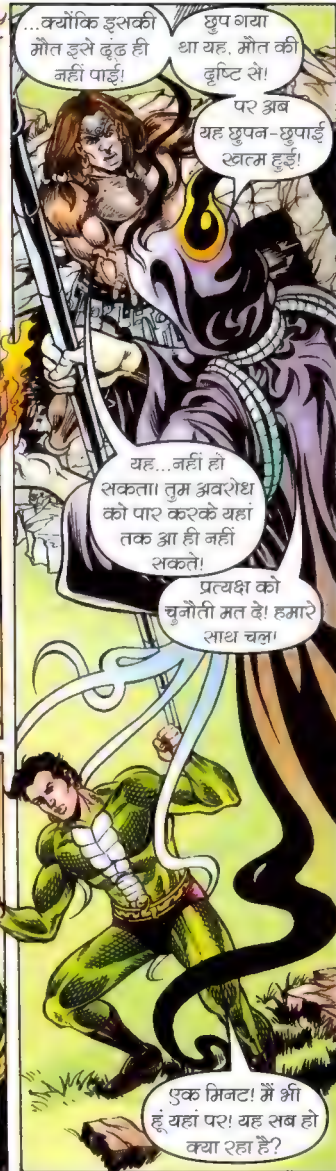
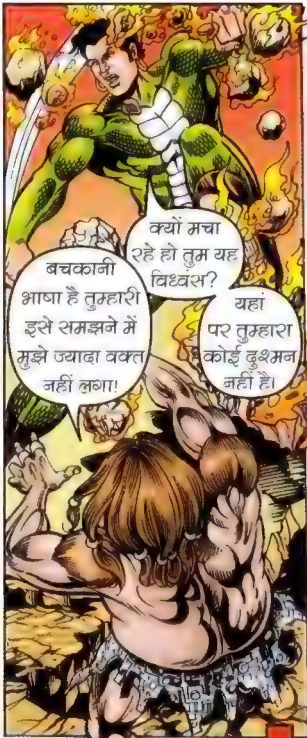












क्यों मचा रहे हो तुम यह विध्वंस? यहाँ पर तुम्हारा कोई दुश्मन नहीं है।

बचकानी भ्राष्ट्रा है तुम्हारी इसे समझने में मुझे ज्यादा वक्त नहीं लगा!

...क्योंकि डलकी मौत इसे दुंद ही नहीं पाई!

छुप गया था यह. मौत की दृष्टि से!

पर अब यह छुपन-छुपाई खत्म हुई!

यह... नहीं हो सकता। तुम अवरोध को पार करके यहाँ तक आ ही नहीं सकते!

प्रत्यक्ष को चुनौती मत दे! हमारे साथ चलो!

और... तुम हो कौन?

कौन हूँ मैं? कोई मुझे पहचाने भी तो कैसे?

मैं तो सभी से मिलता ही जीवन के आखिरी पल में हूँ!

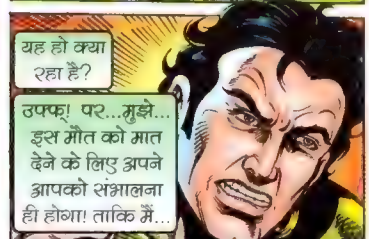
और उसके बाद न जानने की जरूरत पड़ती है, और न पहचानने की!

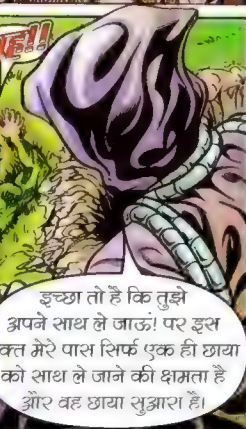
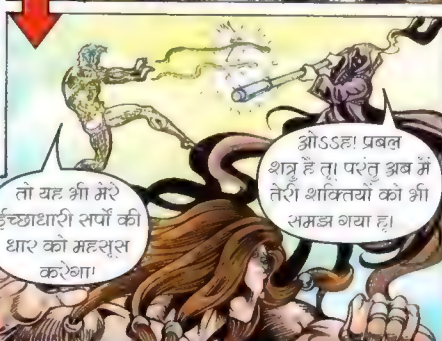
यह तुम्हारे समय की दुनिया नहीं है। तुम लाखों वर्षों के बाद जागे हो।

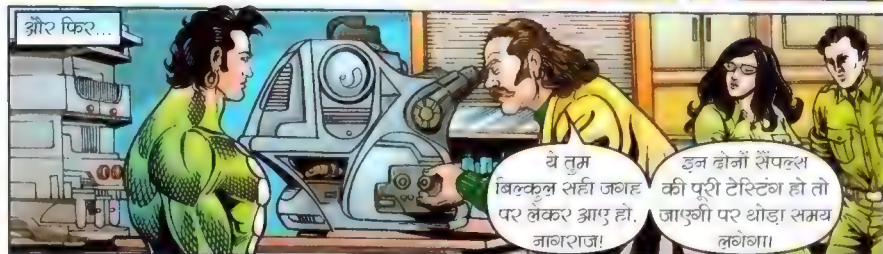
लाखों वर्षों बाद भी यह सिर्फ इसीलिए जाग पाया...

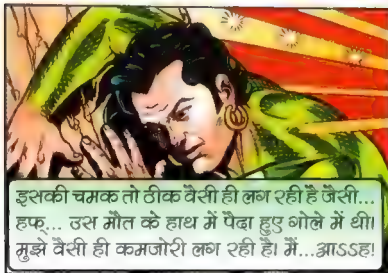
एक मिनट! मैं भी हूँ यहाँ पर! यह सब हो क्या रहा है?

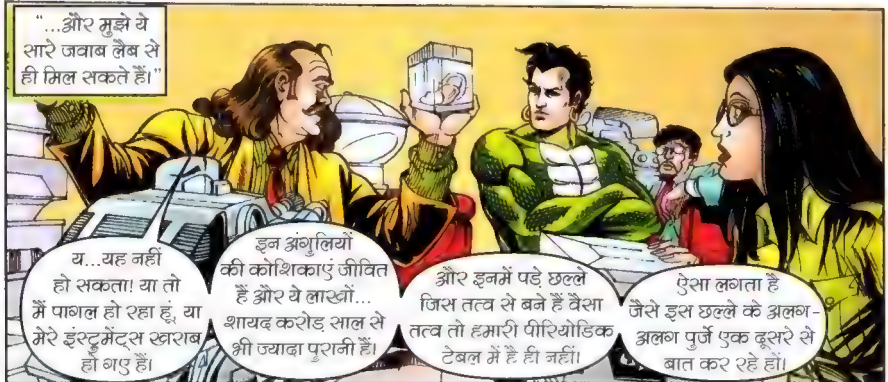
मौत हूँ मैं!



















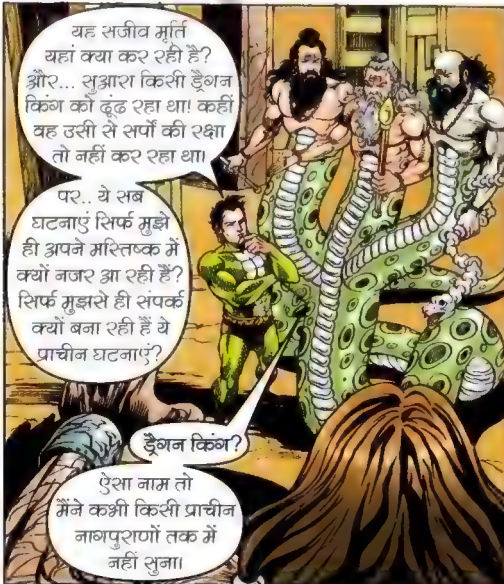
देखिए! इस मूर्ति की वही दो अंगुलियां कटी हैं जो मेरे धारनाओं ने काटी थीं।



और...

देखिए!... मूर्ति फिर से अपने आप पूर्ण हो रही है।

सुलझाने की कोशिश में गुत्थी और उलझ गई है।



यह सजीव मूर्ति यहां क्या कर रही है? और... सुआरा किसी डैगन किंग को दूँद रहा था! कहीं वह उसी से सर्पों की रक्षा तो नहीं कर रहा था।

पर... ये सब घटनाएं सिर्फ मुझे ही अपने अस्तित्व में क्यों नजर आ रही हैं? सिर्फ मुझसे ही संपर्क क्यों बना रही हैं ये प्राचीन घटनाएं?

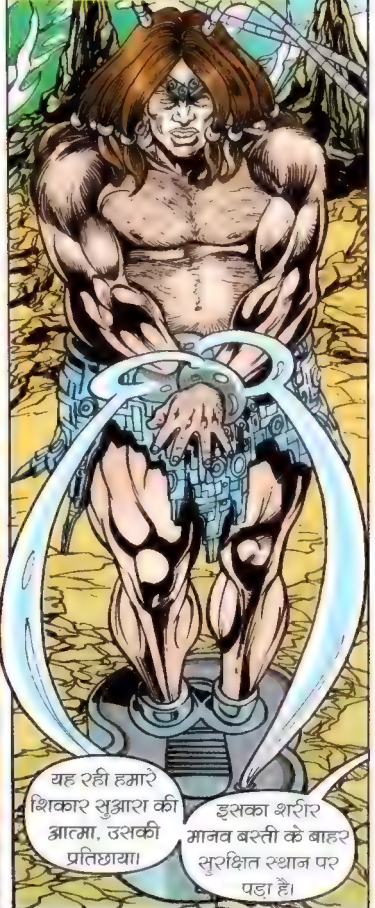
डैगन किंग?

ऐसा नाम तो मैंने कभी किसी प्राचीन नागपुराणों तक में नहीं सुना।



"कौन हो सकता है यह डैगन किंग जिसे हमारे संरक्षक दूँद रहे थे? अवश्य यह डैगन किंग वही अंतरा होगा जिससे कि वे हमें बचाना चाहते थे।"

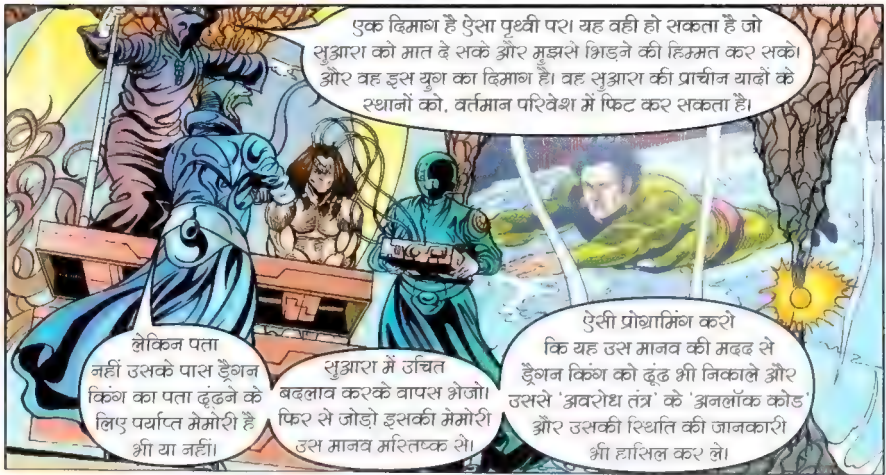
"मैं सहमत हूँ, महात्मन! अब तो डैगन किंग का नामोनिशान तक नहीं बचा होगा। रक्षक सुआरा उसे दूँदेंगे कहां? और दूँदेंगे तो क्या?"



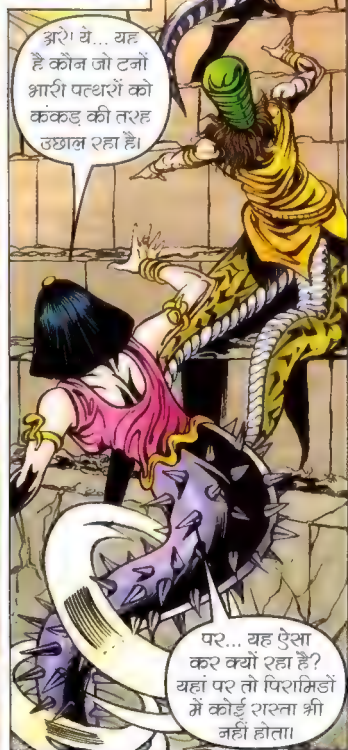
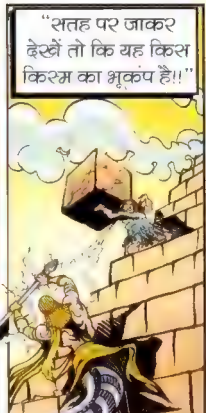
यह रही हमारे शिकार सुआरा की आत्मा, उसकी प्रतिछाया।

इसका शरीर मानव बस्ती के बाहर सुरक्षित स्थान पर पड़ा है।





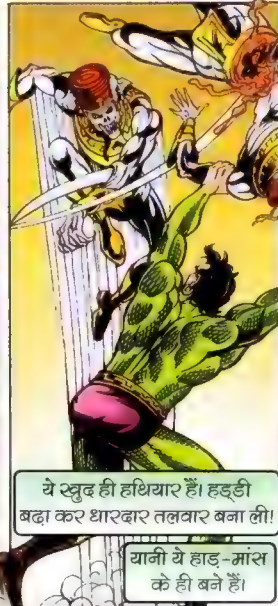
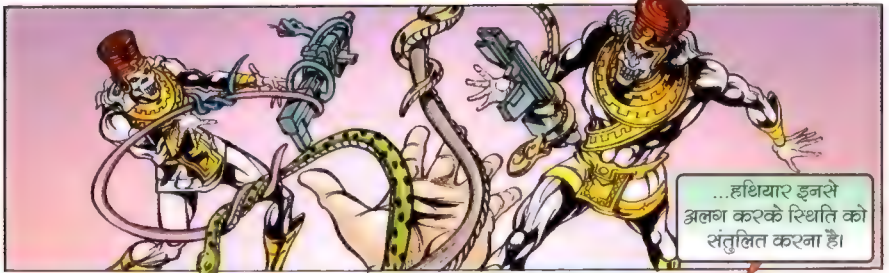
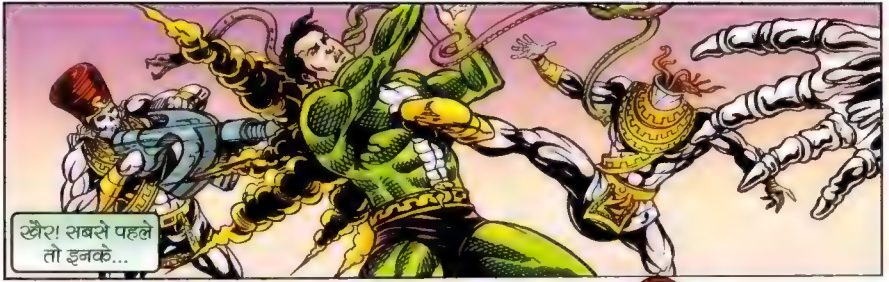


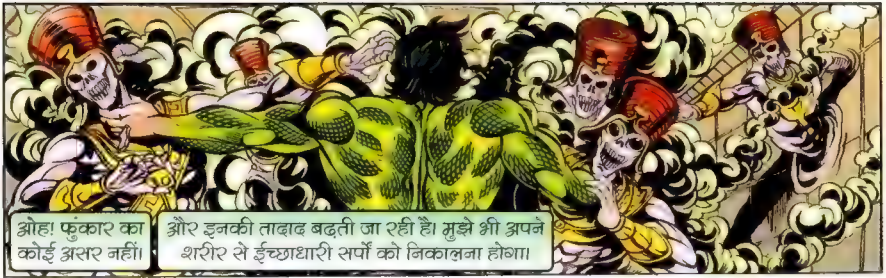




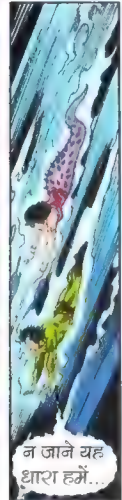
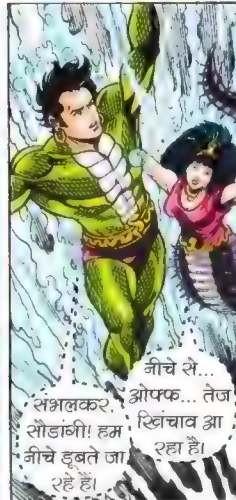
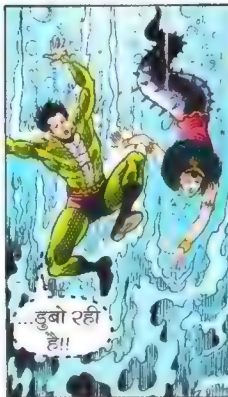




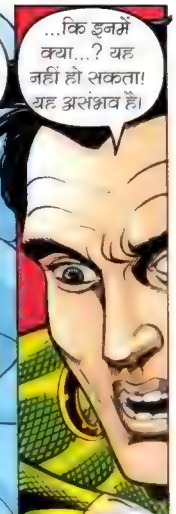


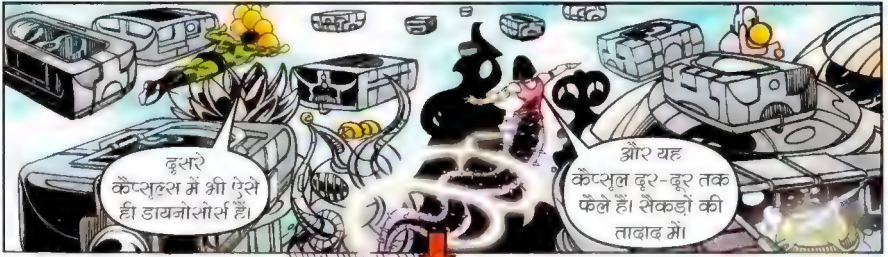












दूसरे
कैप्सूल में भी ऐसे
ही डायनोसोर हैं।

और यह
कैप्सूल दूर-दूर तक
फैले हैं। सैकड़ों की
ताबाद में।



तुम पहले से ही
काफी कुछ जानते हो,
नागराज! तुम्हें कैसे पता
कि यहां पर डायनोसोर
जैसे प्राणी होंगे?

मैं तुम्हें पूरी
बात बताऊंगा! पर
पहले हमें सुआरा देव
को दंडना होगा।

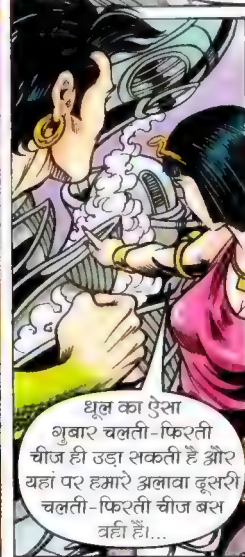
अगर वे इन
प्राणियों को ही खत्म
करने आए हैं तो इनको
छोड़कर आने क्यों
बढ़ गए हैं?



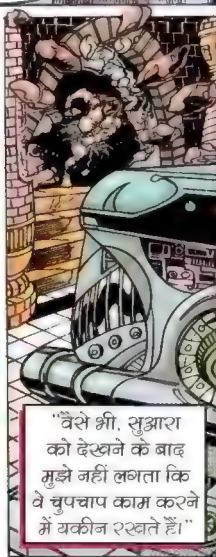
ऐसा लगता
है जैसे कि हम
किसी दूसरे ग्रह
पर आ पहुंचे हों।
ऐसा दृश्य, पृथ्वी
पर तो मैंने कभी
नहीं देखा!

कहीं हम किसी
समय सुरंग से होते हुए
भविष्य में तो नहीं आ
पहुंचे हैं?

नहीं। ऐसे जीव
मैंने अपने मानस पटल
पर देखे थे! सुआरा शायद
इनको ही खत्म करने
यहां पर आए हैं।



धूल का ऐसा
बुबार चलती-फिरती
चीज ही उड़ा सकती है और
यहां पर हमारे आलावा दूसरी
चलती-फिरती चीज बस
वही है।...



"वैसे भी, सुआरा
को देखने के बाद
मुझे नहीं लगता कि
वे चुपचाप काम करने
में यकीन रखते हैं।"

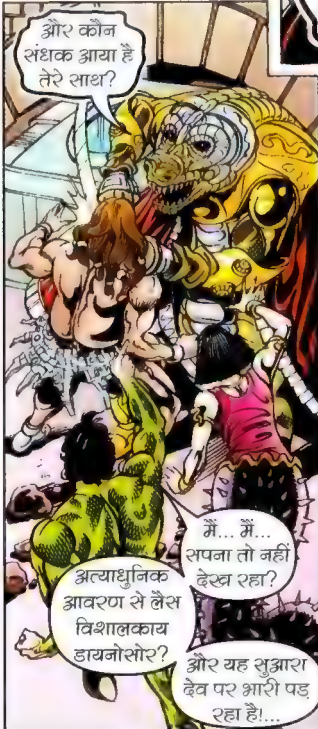
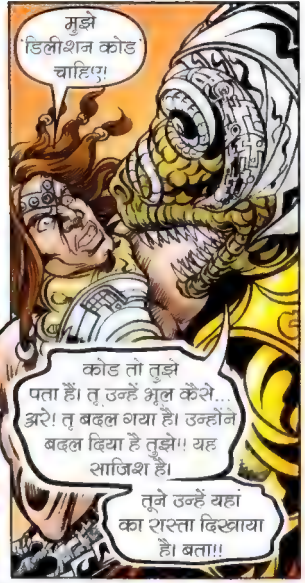


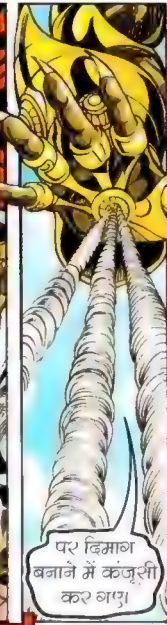
"अब बताओ,
नागराज! क्या है
यह सारा
किरसा? कौन हैं
सुआरा देव?"

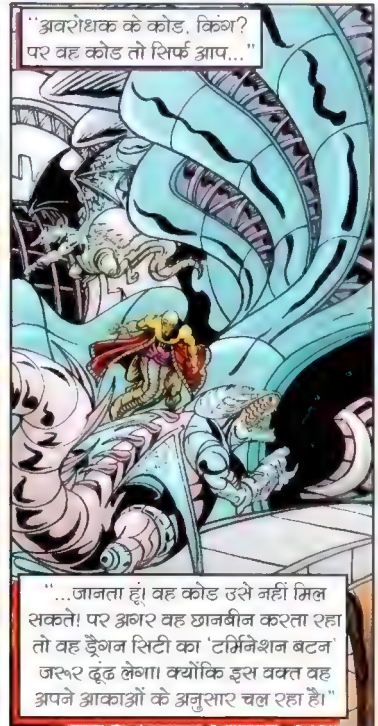
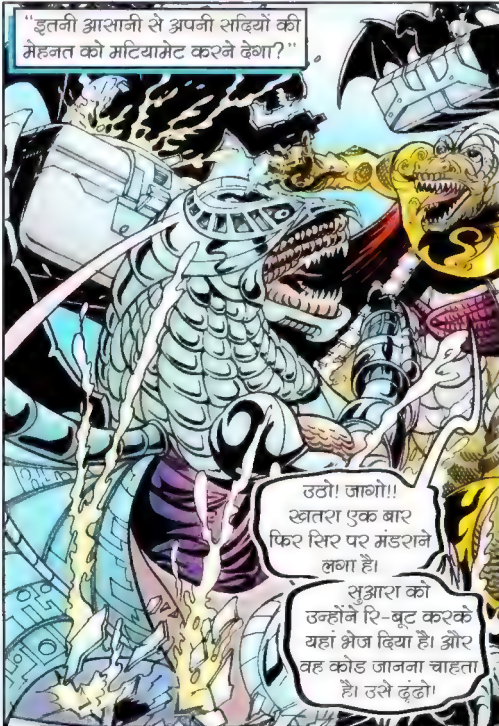


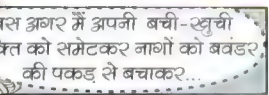
तु मुझे जगाने
आया था या हमेशा
के लिए सुलाने?













एक दूसरे
को नष्ट कर देंगे।
आऽऽह!!

साँसें वापस
आ रही हैं।



अब... सुआरा
देव की मदद
को चलो!

उनकी मदद यही
होगी, यौडांगी कि हम
चमकते गोले को नष्ट करके
द्वैशन आरमी की शक्ति को
क्षीण कर दें।

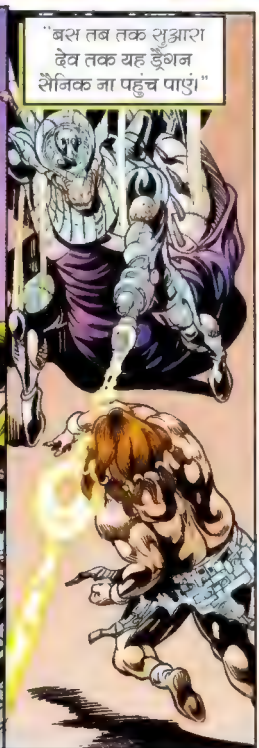
पर तुम जैसे-जैसे
इसके पास जाओगे, तुम्हारी
शक्ति और कम होती जाएगी।
और तुम इतनी ऊपर पहुँचोगे
कैसे? तुम्हारी उड़ने की शक्ति
तो पहले ही काफी कमजोर
हो चुकी है।



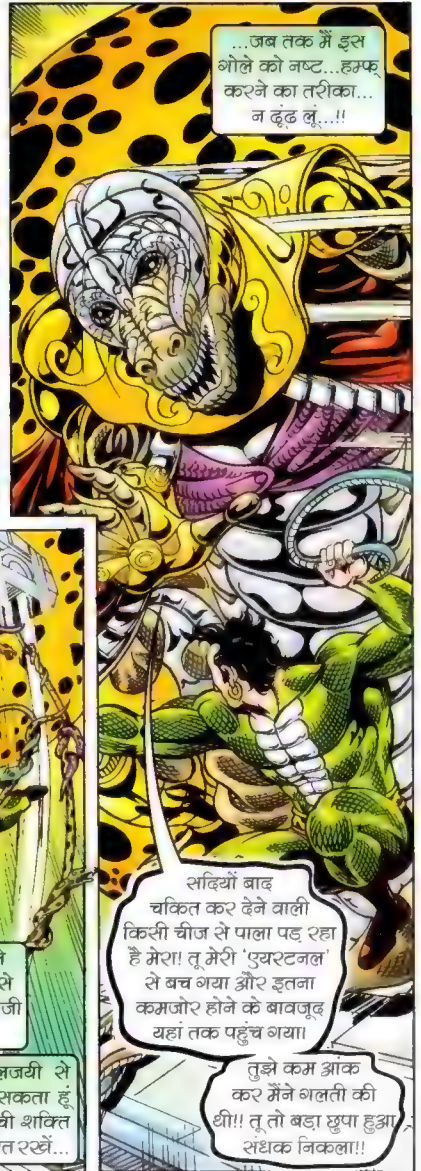
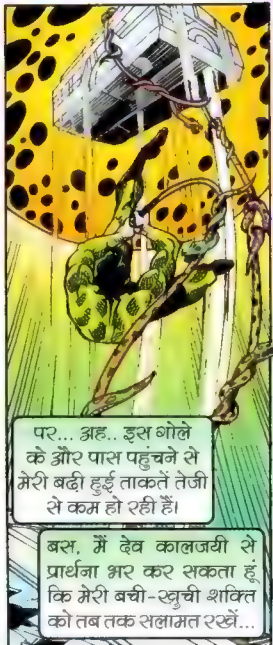
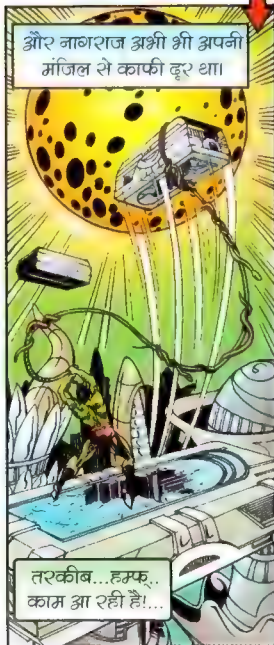
ये हवा में
उड़ते ताबूत! ये
मेरे लिए...

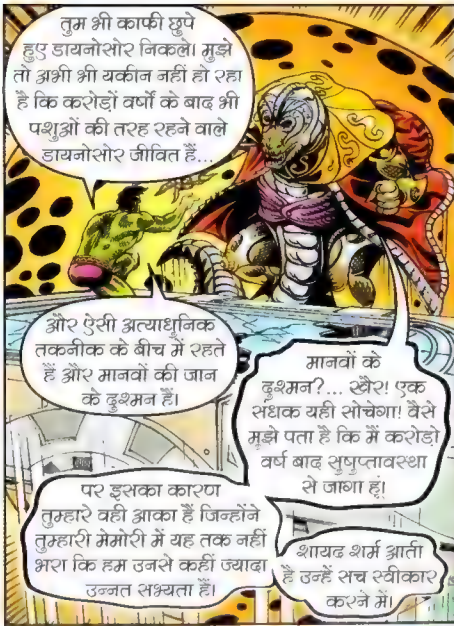


...सीढ़ी
का काम
करेंगे!...

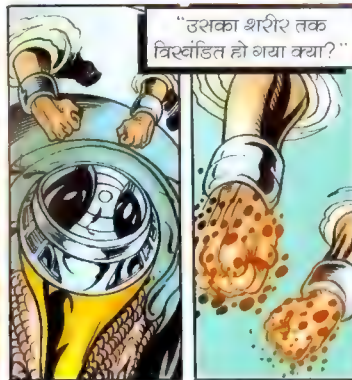
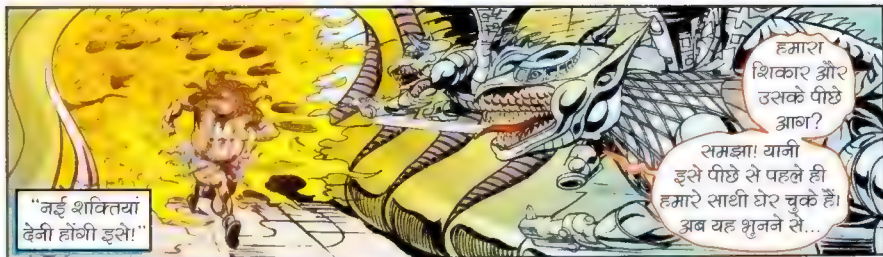


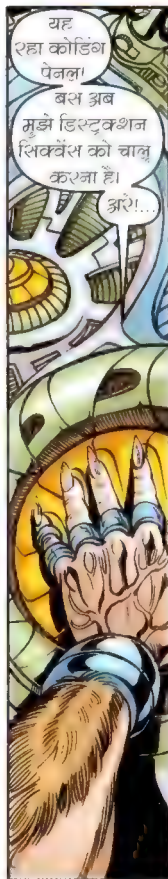
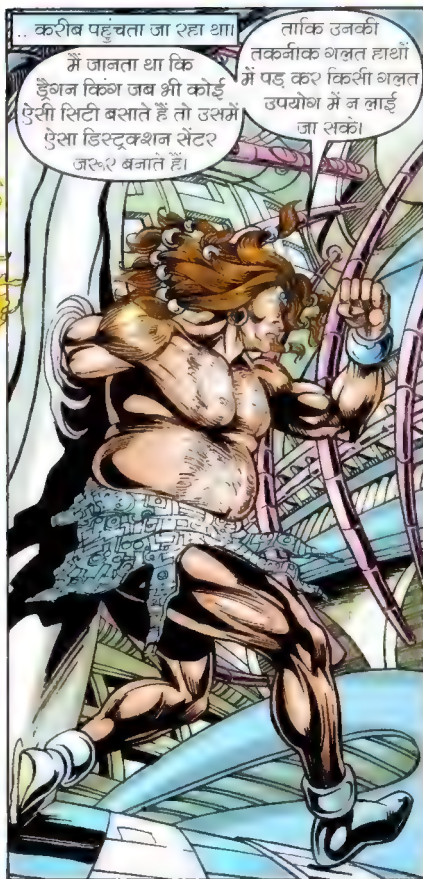
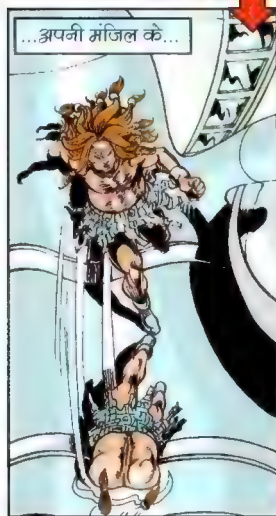
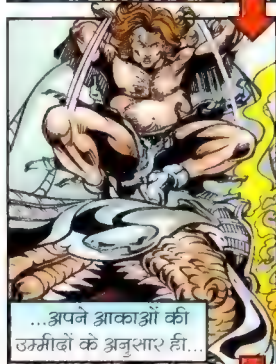
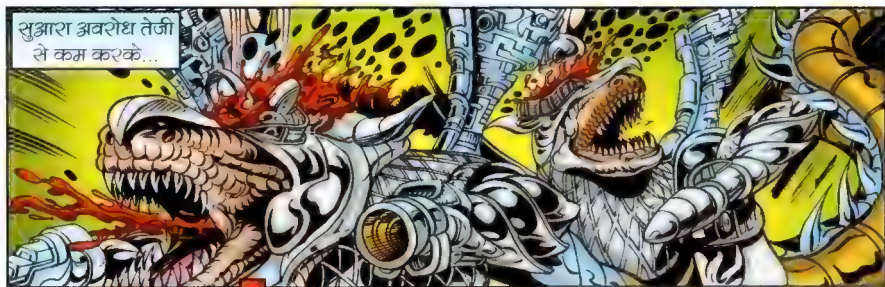
"बस तब तक सुआरा
देव तक यह द्वैशन
सैनिक ना पहुँच पाएँ।"



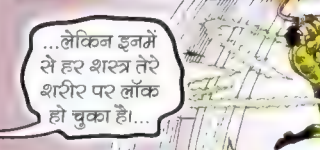
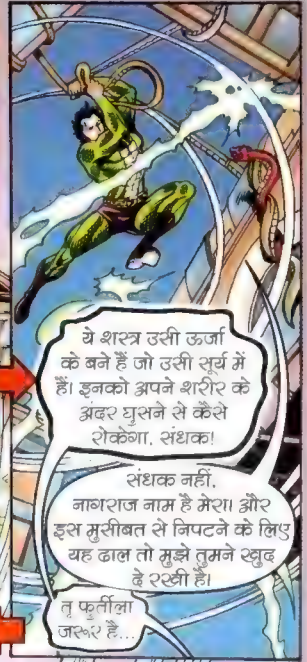
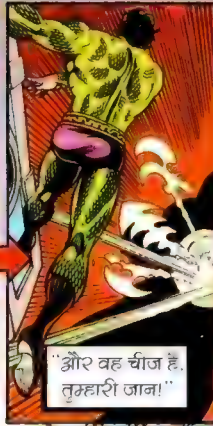
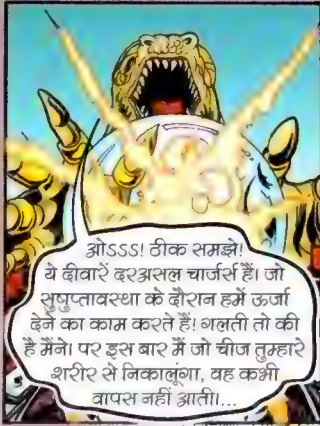












उसकी
जल-रत नहीं है मैं
यहीं पर हूँ।

एक ऐसा संधक जो
अपने शरीर में दूसरे संधक को
रख सकता है! अविश्वसनीय! यानी
उन्होंने जैविक रोबोट बनाने में
काफी प्रगति कर ली है।

अगर तू इतने से ही
चकित हो रहा है, तो बेहोश
होने के लिए तैयार हो जा। क्योंकि
नागराज के शरीर में मेरे जैसे
कई सर्प रहते हैं।

इतने कि तेरे एक सैनिक पर
बस-बस इच्छाधारी सर्पों का
हिसाब निकलेगा!

और इनपर तेरे
चमकते गोले की किरणों
कोई ख़ास असर दिखा
पाएगी, ऐसा मुझे
नहीं लगता।

मैं... मैं श्रमिंत
हो रहा हूँ। सर्प
संधक!
क्या वे... ऐसा भी
कर सकते हैं! और... और
जो मैं देख रहा हूँ, उसपर
यकीन करना मेरे लिए
भी संभव नहीं है!

यकीन
करो या न
करो!

"... और साथ
में तुम, डूबन
किंग।"

"लेकिन मानवों के दुश्मनों की यह डायनो
सिटी आज नष्ट होकर रहेगी! और साथ ही
नष्ट होकर रहेगी तुम्हारी डूबन आर्मी..."



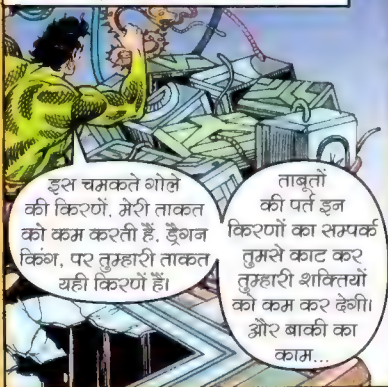
नाग रक्षियों के झटके से
हवा में तैरते ताबूत, कठपुतलियों
की तरह हरकत में आ गए।

और ड्रैगन किंग को
चारों तरफ से घेरने लगे!



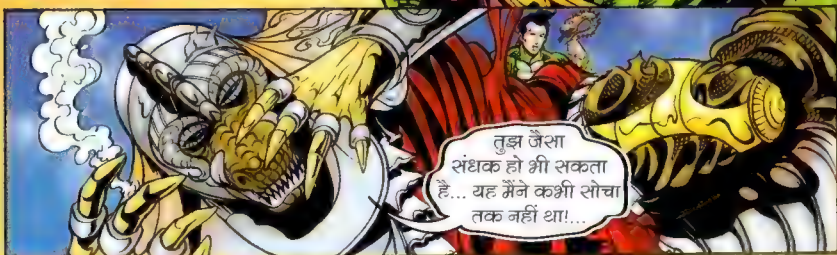
...मेरे
ध्वंसक सर्प
कर देंगे।

और जल्दी ही ड्रैगन किंग का शरीर ताबूतों
की कई पर्तों की कैद के अंदर था!

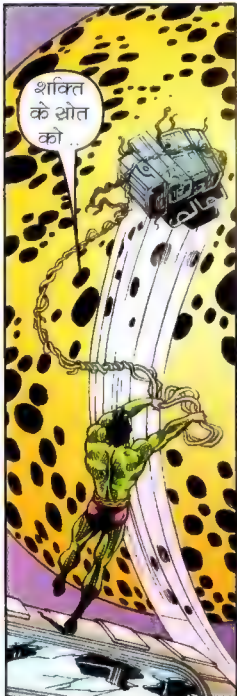
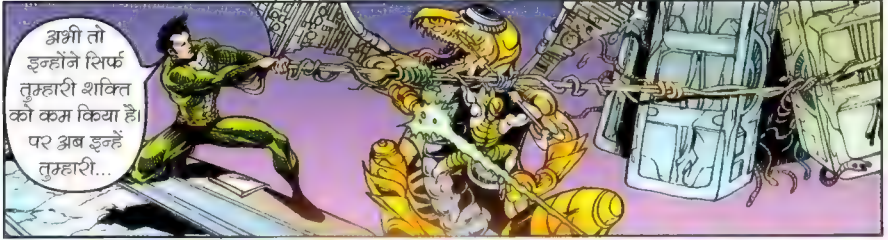


इस चमकते गोले
की किरणों, मेरी ताकत
को कम करती हैं. ड्रैगन
किंग, पर तुम्हारी ताकत
यही किरणें हैं।

ताबूतों
की पर्त इन
किरणों का सम्पर्क
तुमसे काट कर
तुम्हारी शक्तियों
को कम कर देंगी।
और बाकी का
काम...



तुझ जैसा
संघक हो गी सकता
है... यह मैंने कभी सोचा
तक नहीं था!...

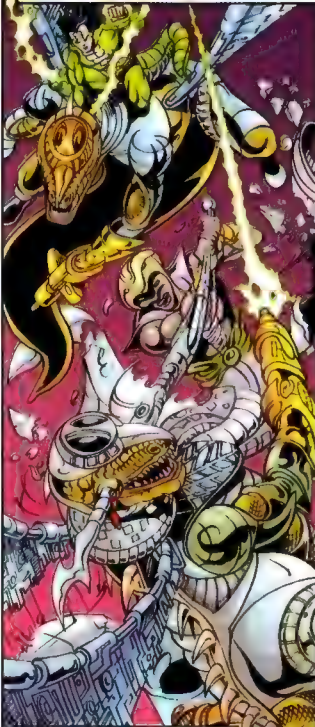




"...इस कोड को ग्रहण करने वाला बटन नहीं दबेगा, तब तक डिस्ट्रक्शन चेंबर की मशीनें चालू नहीं होंगी।"

'डिस्ट्रक्शन कोड' चालू क्यों नहीं हो रहा है। कोई तो...

अरे! चालू हो गया। यानि अब...



"कूछ ही मिनटों में डायनो सिटी धूल में मिल जाएगी!"

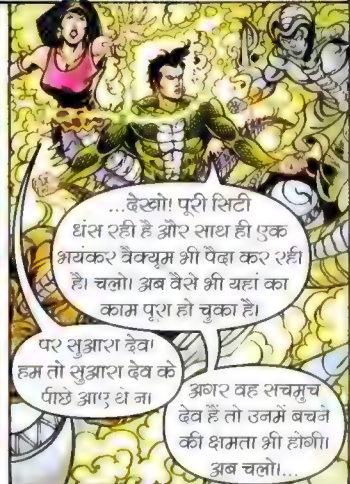
"और इसके साथ ही डैंगन आर्मी और उनपर राज करने वाले डायनो-सोर डैंगन किंग का नामोनिशान हमेशा के लिए मिट जाएगा।"



नागराज!
ऊर्जा का श्रोत खत्म होते ही ये पुरानी मूर्तियों की तरह दूट रहे हैं।

गूड! अब डैंगन किंग का भी यही हाल होगा!

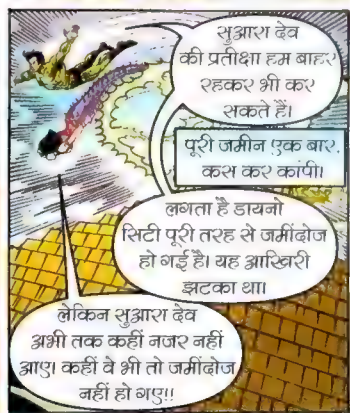
और हमारा भी। अगर हम यहां से तुरंत बाहर नहीं निकले तो...



...देखो! पूरी सिटी धंस रही है और साथ ही एक भयंकर वैक्यूम भी पैदा कर रही है। चलो! अब वैसे भी यहां का काम पूरा हो चुका है।

पर सुआरा देव हम तो सुआरा देव के पीछे आए थे ना

अगर वह सचमुच देव हैं तो उनमें बचने की क्षमता भी होगी। अब चलो...

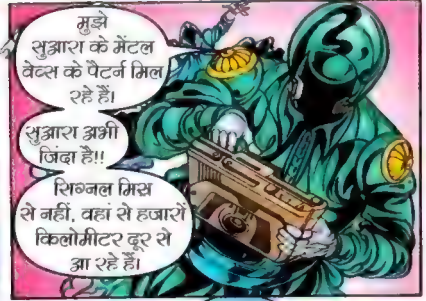


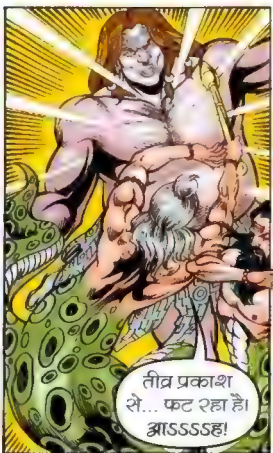
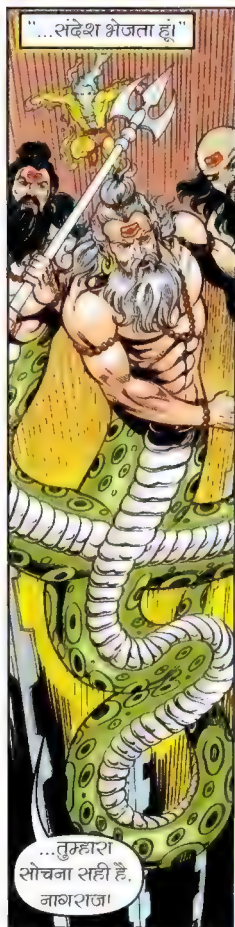
सुआरा देव की प्रतीक्षा हम बाहर रहकर भी कर सकते हैं।

पूरी जमीन एक बार कस कर कापी।

लगता है डायनो सिटी पूरी तरह से जमींदोज हो गई है। यह आखिरी झटका था।

लेकिन सुआरा देव अभी तक कहीं नजर नहीं आए। कहीं वे भी तो जमींदोज नहीं हो गए!!





"पता नहीं, सौडागी! पर वे संकेत हैं महाशक्तिशाली!"

"मेरे खयाल से अब यहां पर कुछ और होने वाला नहीं है। हमें नागद्वीप पहुंचकर सही स्थिति का पता लगाना होगा।"

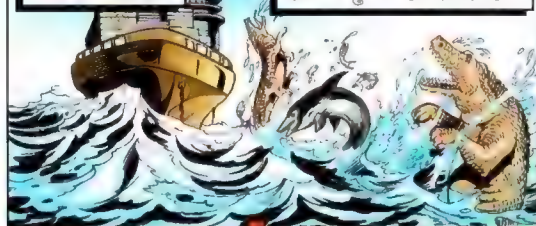


जमीन तो जमीन... नील के पानी को देखो!!

भागो! जमीन तो झूले की तरह हिल रही है!!

"जलजला पानी को कैसे मथ रहा है!!"

"ऐसा जलजला तो कभी न देखा न सुना! यह जलजला है..."



"... या फिर कुछ और!"

लो! सुआरा देव तो यहां से प्रकट हो गए और काफी गुरसे में नजर आ रहे हैं।

ये सुआरा देव नहीं हैं, सौडागी! पर लगते उनके साथी ही हैं। यह शायद वर्तमान समय काल से परिचित नहीं है। इसको रोकना होगा।



महानगर से शीतनाग का टूटा-फूटा संदेश आ रहा है...

"महानगर में श्री एक ऐसी ही प्राणी जमीन के अंदर से, ईमारत की 26 मंजिलों को तोड़ती हुई उसकी छत पर आ निकली है।"



"शायद कोई शरता तबाश रही है।"

"स्वतंत्रा बहुत विकट है, नागराज! डूंगन किंग से कई गुना ज्यादा बड़ा।"

पर ये.. यह कैसे हो...



अब क्या हुआ, नागराज?



दुनिया को विश्र्विकल
संक्रांति में तैयार रखेक आई
लिकवोरिटी फुजरी को बोर्डल
द्वारा ऐसी ही लुचनारु
आ रही है।



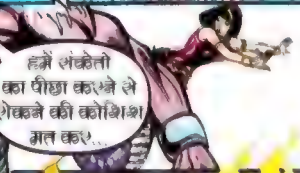
यह कोई
सुनिबोधित पदबंध
है, लीडरशिप। और वह
पदबंध क्या है



यह लिफ
वही बता
सकता है।



आइए!
इसके शरीर से तो
पसीने की ज्वाह, पुलिड
निकल रहा है।



हमें संकेतो
का पीछा करने से
रोकने की कोशिश
मत कर...



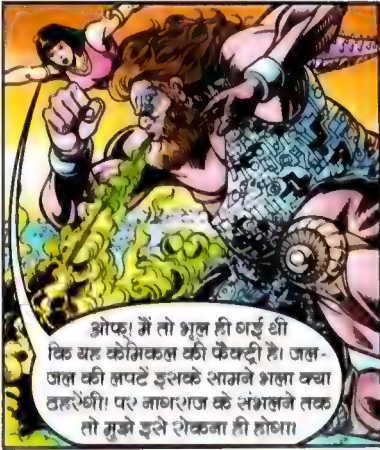
वर्ना तेरे
शरीर में जीवन का
कोई संकेत नहीं
बचेशा।

बह की एलाबनी
को मिलाकर धमाके कर
रहा है। पसीने की ज्वाह
असल निकलता है।



यह आदिमानव
है या चलती फिरती
कॉमिकल फेक्ट्री? खैर,
इससे कोई जवाब फर्क
नहीं पड़ता!!

हमारा काम
तो बस इसे रोकना
है। और बह काम 'जल-
जल' तंत्र आरंभ से कर
सकता है।



ओफ! मैं तो भूल ही गई थी कि यह केमिकल की कैक्ट्री है। जल-जल की लपटें इसके सामने भला क्या रहेंगी! पर नागराज के संभलने तक तो मुझे इसे शेकना ही होगा।



यह हरी वाष्प भला मेरा क्या...



...किबाड़ लेनी! अरे! मेरी बुम भारी क्यों होती जा रही है! य... यह...

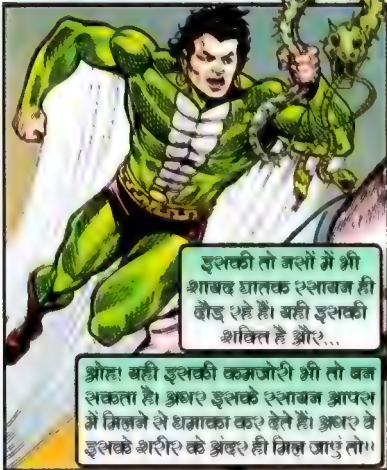


...लोहे में परिवर्तित होती जा रही है। हे वैव! अब तो मुझे सारी तंत्र शक्ति सिर्फ सतह पर बने रहने के लिए लगानी पड़ेगी।



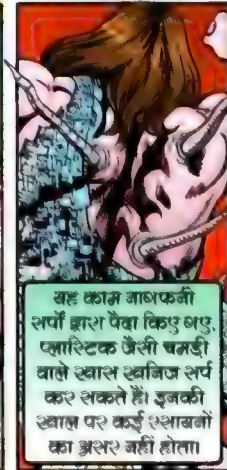
अब इसे तुम्हें अकेले ही शेकना होगा, नागराज।

इसे घुना घातक है! मेरे नाथों का भी यही हाल होगा जो मेरे हाथों का एक्जिट ने किया है!



इसकी तो जलों में भी शाब्द घातक रसायन ही बौद्ध रहे हैं। बही इसकी शक्ति है और...

ओह! बही इसकी कमजोरी भी तो बन सकती है। अगर इसके रसायन आपस में मिलने से धमाका कर देते हैं। अगर वे इसके शरीर के अंदर ही मिल जाएं तो...

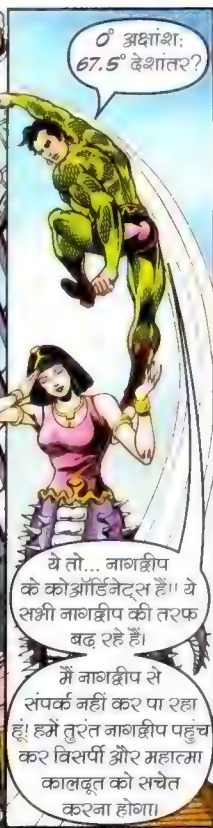
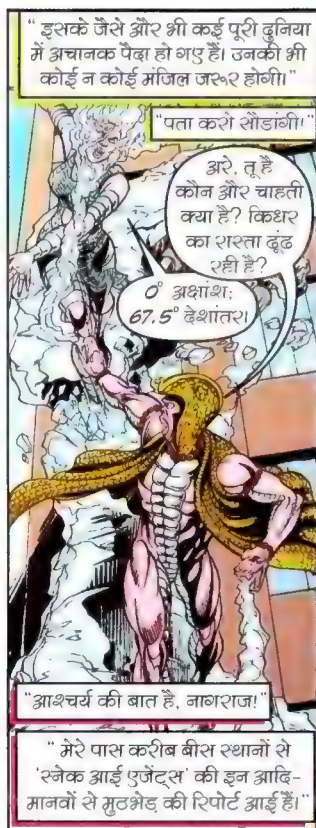


यह काम नाथफकी सर्पो ब्राश पैदा किए गए प्लास्टिक जैसी चमड़ी वाले स्वास खनिज सर्प कर सकते हैं। इनकी स्वास पर कई रसायनों का असर बही होता।



वे अलग-अलग रसायनों से भरी, इस आदिमानव की नर्व-प्रणाली को अंदर से जोड़ देंगे।

अलग-अलग रसायन आपस में मिलेंगे और मेरा काम हो जाएगा।





"तुम सभी ईच्छाधारी सर्प गार्ड्स को संदेश भेज दो कि उनको किसी भी हालत में इन आदिमानवों को रोक कर रखना है!"

यह काम मैं पहले ही कर चुकी हूँ नागराज!



सौदागी! अगर तुम ठीक महसूस नहीं कर रही हो तो तुम मेरे शरीर में समा सकती हो।

नहीं, नागराज! पानी में डूबते ही मेरी दुम पर असर करने वाला रसायन घालने लगा था।

अब भी शरीरपन तो है लेकिन दिक्कत नहीं दे रहा है। मैं ठीक हूँ। पर मझे



"...अपन रनेक आई गॉर्ड्स की बहुत चिंता हो रही है। पता नहीं उनके पास इस मुरीबत से निपटने लायक क्षमता है भी या नहीं!"

आऽऽऽह! मैंने अपनी बर्फ को -250 डिग्री के तापमान तक पहुंचा दिया है। पर फिर भी यह उसको महसूस नहीं कर रही है।

इसकी रगों में खून जैसा कोई तरल पदार्थ बह भी रहा है या नहीं?

लेकिन अगर शीत शक्तियां इसके बाहरी शरीर पर काम नहीं कर रही हैं तो शीतवार इसके शरीर के अंदर करना पड़ेगा।

हर जीवित प्राणी के शरीर में जल की अच्छी खासी मात्रा होती है। और पानी एक ऐसा स्वास द्रव है...



जो जब जमता
है तो उसका आकार
बढ़ जाता है।

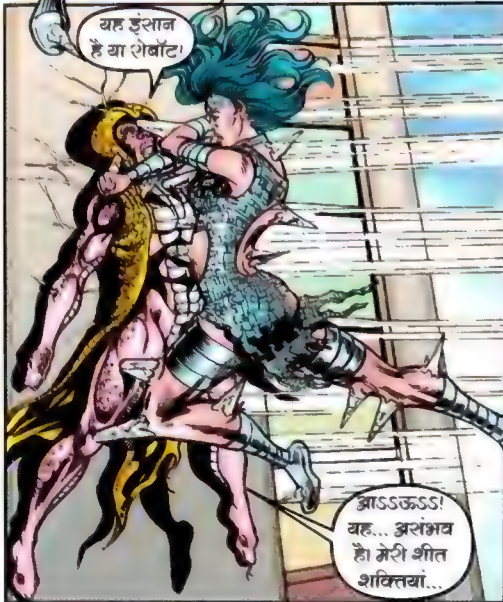


मैंने कहा
तो था कि यह इस
ईलाके से बाहर
नहीं जाएगी।

लेकिन अगर
यह इस पुरिया से बाहर
जाकर धिरे, तो इसमें
मेरी कोई गलती...



...नहीं है।
अरे! यह
तो संभल रही है
और... और वापस
आ रही है।



यह इंसान
है या रोबोट?

आऽऽऽऽ!
वह... असंभव
है मेरी शीत
शक्तियां...



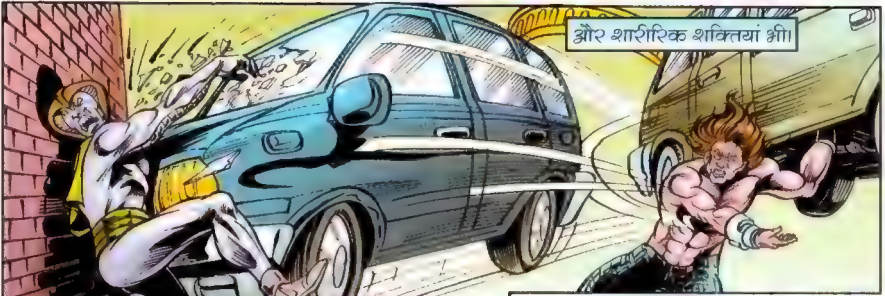
मेरे ही
खिलाफ काम
कर रही हैं। आऽऽऽऽ!
मैं इस केंद्र से छूट
नहीं पा रहा हूँ।

सोडागी
मैं... मैं आदिमानवी
को रोकने में असफल
हो रहा हूँ...



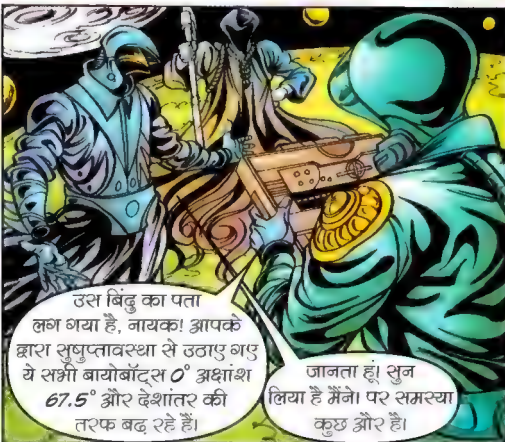
पृथ्वी के दूसरे हिस्सों में भी इच्छाधारी नागशक्ति
आदिमानवों को रोकने में नाकाफी साबित हो रही थी।

क्योंकि इन 'आदिमानवों' की परा-
शक्तियां भी उनकी समझ से परे थीं।



और शारीरिक शक्तियां भी।

आदिमानवों की सेना का नागद्वीप
की ओर मार्च निर्विरोध जारी था।



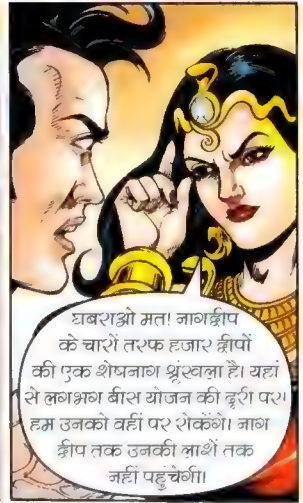
उस बिंदु का पता
लग गया है, नायक! आपके
द्वारा सुषुप्तावस्था से उठाए गए
ये सभी बायोबॉट्स 0° अक्षांश
67.5° और देशांतर की
तरफ बढ़ रहे हैं।

जानता हूं। सुन
लिया है मैंने। पर समस्या
कुछ और है।



"उस स्थान पर तो कुछ है ही नहीं।"

यानी तुम
कहना चाहते हो कि हम
उनके यहां तक आने का
इंतजार करें...







"प्रस्तर सर्प, तू अपनी प्रजाति के सर्प योद्धाओं के साथ अश्व-शेषनाग द्वीप पर रहोगे!"

"तुम्हारा अडिग शरीर शत्रु के पहले धावे की तीव्रता को रोक लेगा!"



"धूम-सर्पों का कबीला उनके ठीक पीछे के रों द्वीपों पर तैनात रहेगा!"

"तुम पर कोई भी जैविक या विध्वंसक बार असर नहीं करता!"



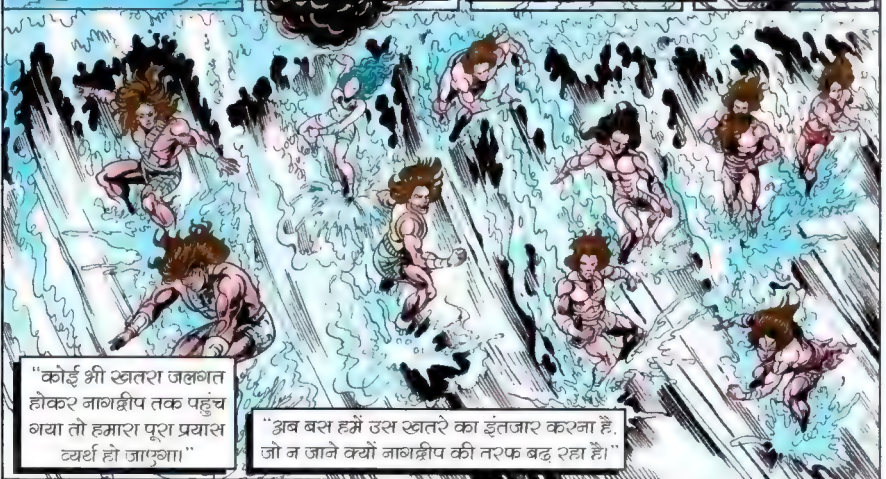
"गुंथी सर्पों का कबीला पश्चिम के द्वीपों से नाग-द्वीप की रक्षा करेगा!"

"तुम्हारे असाधारण मजबूत शरीरों से बने जाल पूर्ण गति से उड़ते वायुयान को भी रोक सकते हैं!"

"पूर्वी दिशा में विसर्प अन्य महानायकों के साथ तैनात रहेंगी जो अश्व पंक्ति से बचकर पार आ गई विपदा को रोकेंगे।"

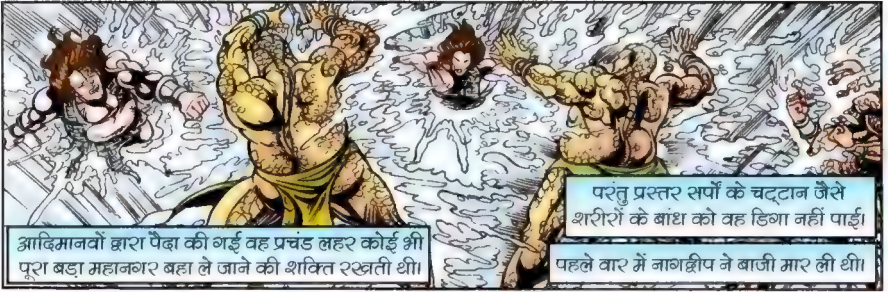


"और मैं जल के अंदर रहकर इस पूरे क्षेत्र पर नजर रखूंगा!"



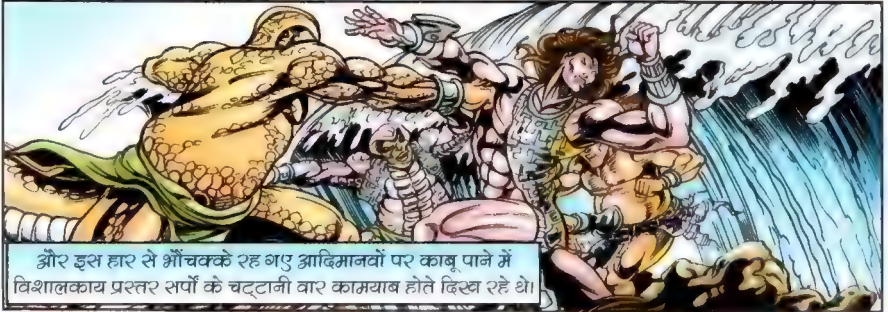
"कोई भी खतरा जलगत होकर नागद्वीप तक पहुंच गया तो हमारा पूरा प्रयास व्यर्थ हो जाएगा!"

"अब बस हमें उस खतरे का इंतजार करना है, जो न जाने क्यों नागद्वीप की तरफ बढ़ रहा है!"



आदिमानवों द्वारा पैदा की गई वह प्रचंड लहर कोई भी पूरा बड़ा महानगर बहा ले जाने की शक्ति रखती थी।

परंतु प्रस्तर सर्पों के चट्टान जैसे शरीरों के बांध को वह डिगा नहीं पाई। पहले वार में नागद्वीप ने बाजी मार ली थी।



और इस हार से भौंचक्के रह गये आदिमानवों पर काबू पाने में विशालकाय प्रस्तर सर्पों के चट्टानी वार कामयाब होते दिख रहे थे।



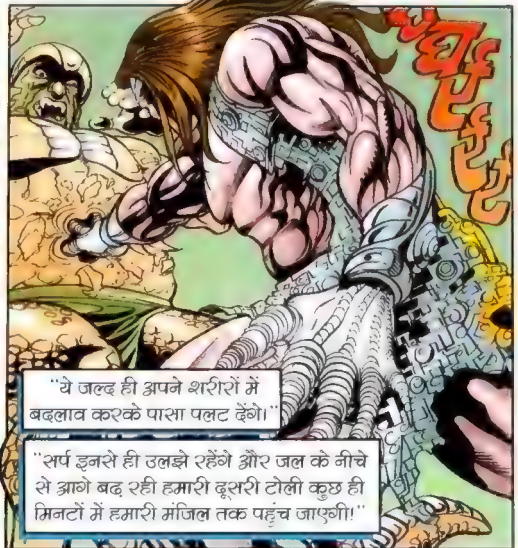
यह महाराज्यम बिना आंखों के भी देखा जा रहा था।

नायक!

अचानक कई आकृतियां प्रकट होकर हमारी सेना का रास्ता रोक रही हैं।

और... वे सफल होती दिख रही हैं! इमेजर इनको नाग प्रजाति का बता रहा है।

शायद नागराज के साथी होंगे। पर ये बायो रोबोट्स बहुत विकसित तकनीक के हैं! इनकी अनुकूलन क्षमता बहुत तेज है!



"वे जल्द ही अपने शरीरों में बदलाव करके पारा पलट देंगे।"

"सर्प इनसे ही उलझे रहेंगे और जल के नीचे से आगे बढ़ रही हमारी दूसरी टोली कुछ ही मिनटों में हमारी मंजिल तक पहुंच जाएगी!"

"जल के नीचे कोई महासर्प मौजूद दिखता है। वह अकेले ही हमारी पूरी टोली को संभाले हुए है।"

"कुछ आदिमानवों को तो उसने इतना क्षतिग्रस्त कर दिया है कि उन्हें किसी भी कमांड के द्वारा रिपेयर नहीं किया जा सकता!"

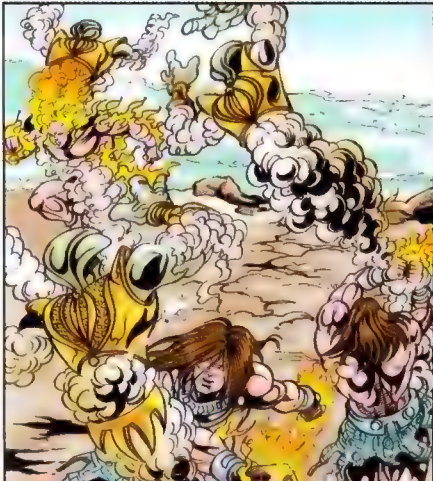
"इस महायोद्धा को तो सिर्फ प्रलय ही रोक सकती है।"

"तो प्रलय लाएं हम! समुद्र क्षेत्र का औगोलिक मानचित्र मुझे दिखाओ। छोटी से छोटी चीज के साथ!!"

पानी के नीचे तो आदिमानवों की लहर धमी हुई थी!



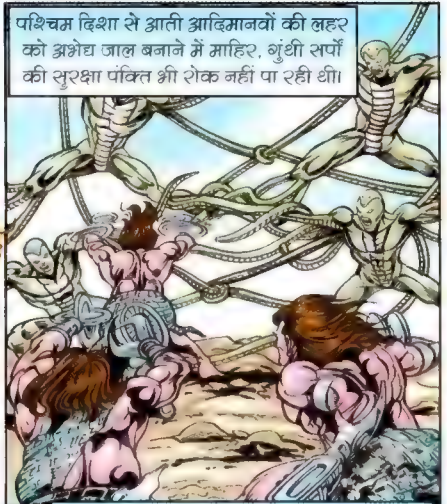
परंतु सतह पर स्थिति विपरीत थी। प्रस्तर सर्पों का अवरोध ढह चुका था। पर अब धूम सर्पों की बारी थी। और कालदूत ने कुछ सोच समझ कर ही उन्हें प्रतिरोध की दूसरी पंक्ति बनाया था।



परंतु जल्दी ही पलड़ा! आदिमानवों की तरफ झुकता नजर आ रहा था।

उनकी दहकती मुट्टियों के वार धूम्र सर्पों के शरीर पर घातक वार बरसाना शुरू कर चुके थे।

और धूम्रसर्प इस शीघ्रता के सामने ठहर नहीं पा रहे थे!



किसी भी हथियार से न काट सकने वाले उनके शरीरों को आदिमानवों की आरि की तरह घूमती कलाई किस अद्भुत तकनीक से काट रही थी, उसका अंदाजा तक वे नहीं लगा पा रहे थे।

आदिमानवों की टोली ने आरि क्षति उठाने के बावजूद भी तीन अवरोध तो पार कर लिए थे।



परंतु अंतिम अवरोध पर उनको रोकने की योजनाएं हर पल बनाई जा रही थी।

कुमारी! आदिमानव अपने शरीरों को हमारे वारों के अनुकूल बड़ी तेजी से ढाल रहे हैं। और वे तेजी से हमारी तरफ आ रहे हैं।



"तो फिर हम उनकी इस क्षमता को ही उनकी कमजोरी बनाएंगे।"

"जैसे ही उनके शरीर हमारे वारों को निष्क्रिय करने के लिए, वारों के अनुरूप ढलेंगे..."

"हम वार को बदल देंगे! दूसरे प्रकार के वार का प्रहार शुरू कर देंगे!"

नायक, यह तो कोई महाशक्ति है! हमारी फौज इनकी सुरक्षा पंक्ति को भेद नहीं पा रही है।

उलटे यह हमपर भारी पड़ रही है।

भारी पड़ रही है? ये अवश्य नाशशक्ति है। और अगर हमारे सेंसर भी इन्हें भांप नहीं पा रहे हैं तो ये अवश्य ईच्छाधारी नाश होंगे।

"डायनोसॉर्स के अलावा पृथ्वी पर सिर्फ ईच्छाधारी नाशों में ही हमारे आदिमानवों को खेल सकने की शक्ति है।"

नाशशक्ति ने, बड़े कारगर तरीके से आदिमानवों की शक्ति को क्षीण करके उनका आक्रमण रोक दिया था।

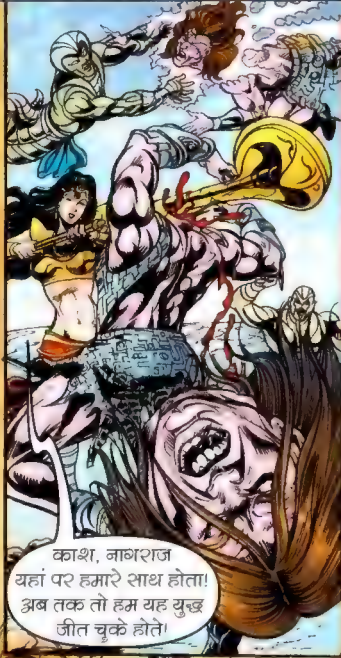
"अगर जल्द ही कुछ न किया तो हमारी पूरी सेना निष्क्रिय हो जाएगी!"

"तुमने अभी तक मुझे उस क्षेत्र की भौगोलिक जानकारी क्यों नहीं दी है? जल्दी करो। मुझे कोई न कोई उपाय सोचना ही होगा।"

तब तक कापालिक को इस युद्ध में उतार दो।

वह हमारा ऐसा आखिरी हथियार है जो ईच्छाधारी नाशशक्ति से भी निपट सकता है।

आदिमानवों की संख्या बड़ी तेजी से घट रही थी।



काश, नागराज
यहां पर हमारे साथ होता!
अब तक तो हम यह युद्ध
जीत चुके होते।



समुद्र में अब यह
लहर कैसे? क्या कोई
और हमलावर टोली
आ रही है।



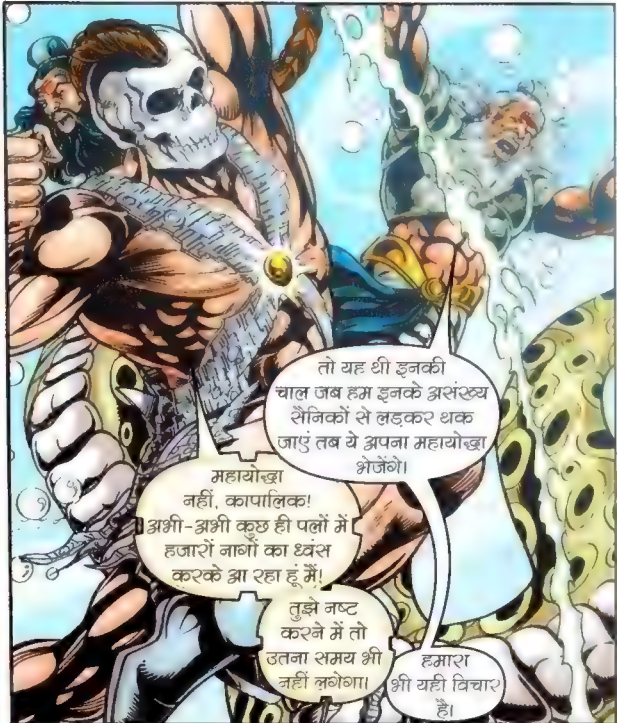
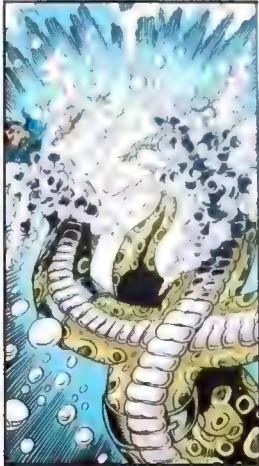
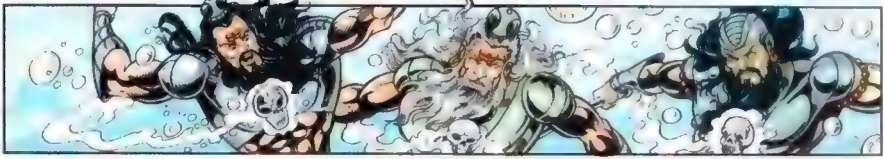
हे शेषनाग!
य...यह क्या है?

आ... आपने सही
कहा। अग्नी तो नागराज को
यहां पर होना चाहिये था।

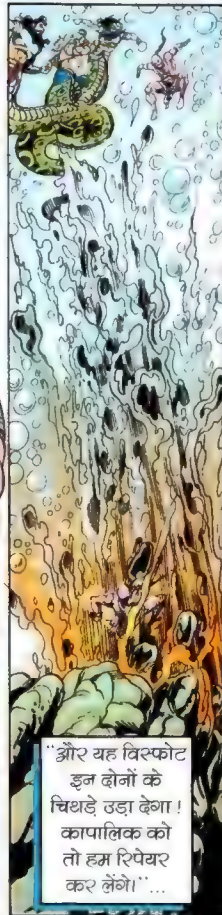
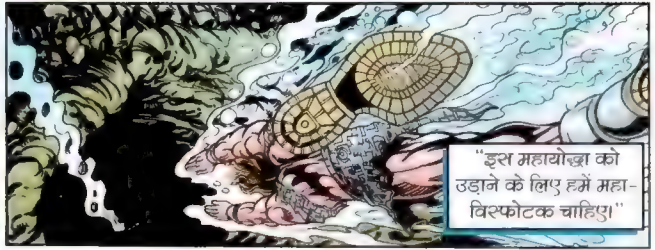
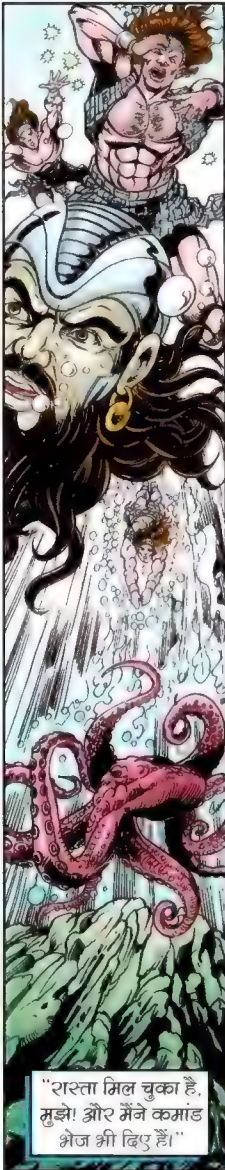


कुछ ही पलों बाद वह अज्ञात हमलावर
युद्धक्षेत्र का नक्शा पलट चुका था।

नागद्वीप की सुरक्षा दीवार
कुछ ही देर में ढह चुकी थी।

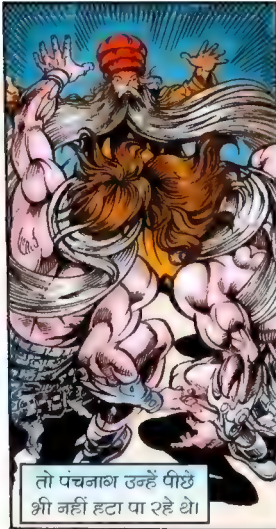




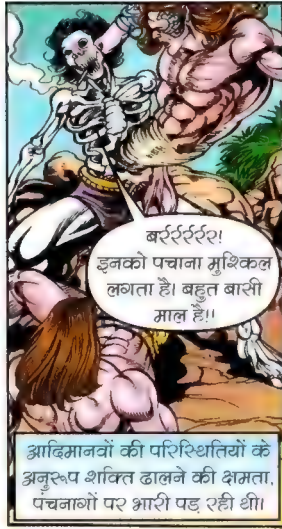




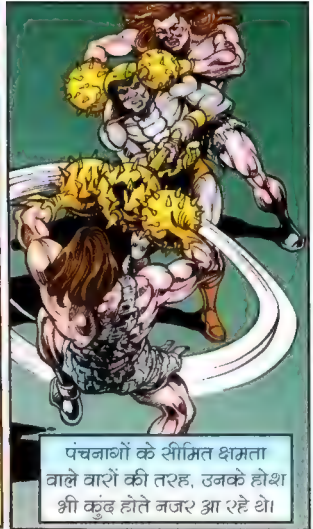




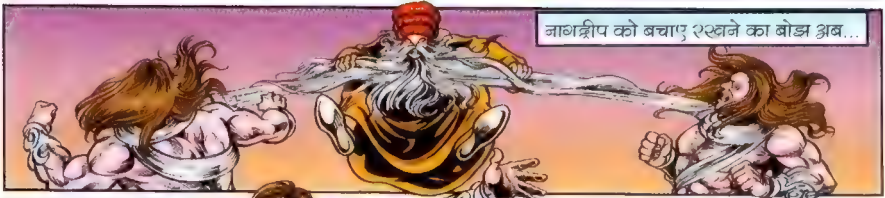
तो पंचनाब उन्हें पीछे
श्री नहीं हटा पा रहे थे।



आदिमानवों की परिस्थितियों के
अनुरूप शक्ति ढालने की दमता,
पंचनाबों पर भारी पड़ रही थी।



पंचनाबों के सीमित क्षमता
वाले वारों की तरह, उनके होश
श्री कुंठ होते नजर आ रहे थे।

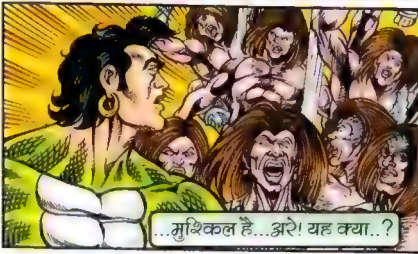
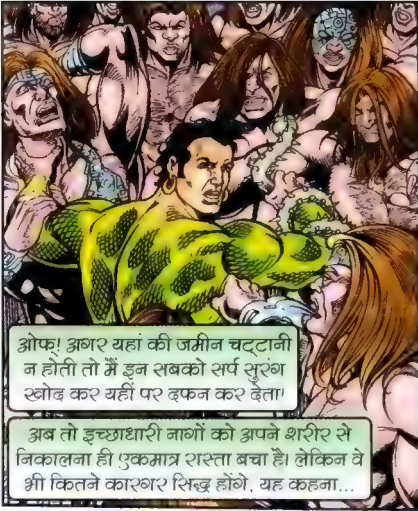


नागद्वीप को बचाए रखने का बोझ अब...



वही हुआ जिसका मुझे डर था।
पंचनाब अपनी सारी शक्ति लगाकर
श्री इनके सामने ठहर नहीं पाए।

मेरी विषफुंकार श्री इनको
ज्यादा विचलित नहीं कर पा रही
है। ये आखिर हैं क्या चीज?



एक बड़ी कीमत पर जल्द ही वह युद्ध जीता जा चुका था।

नागराज और
द्वैगन किंग बुरी
तरह से घायल
हो चुके थे!



आऽऽह! खतरा
टालने में मदद करने के
लिए शुकिया!... कुछ समय
लगेगा पर मेरी शक्ति
वापस आ जाएगी।

पर... मेरी
नहीं! अब मेरे घाव
नहीं भरेंगे।

पर... यह सब है क्या?
अगर इस वक्त तुम मेरी मदद
न करते तो मैं तुम्हें हमेशा एक
दुष्ट प्राणी ही समझता! और इन
आदिमानवों को दोस्त!

कौन हैं ये
आदिमानव? और
नागद्वीप से इनका
क्या रिश्ता है?

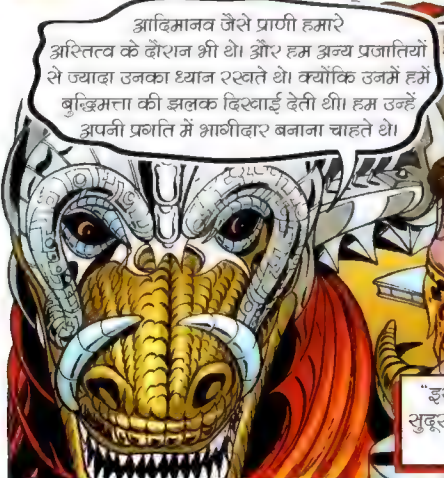


सच्चाई तुम्हें
जाननी ही पड़ेगी, नागराज!
पहले मौका ही नहीं मिला
था! वर्ना यह गलतफहमी
ही न रहती!

डायनोसोर और
सरीसृप कभी भी किसी भी
प्रजाति के दुश्मन नहीं रहे।
बल्कि हम हमेशा उनके
रक्षक रहे।

क्योंकि लंबे समय
तक अस्तित्व काल में
रहने के कारण हमने हर
तरह की तकनीक में
प्रगति की थी!

अभी मैंने तुम
मानवों के नगर देखे।
तुम अभी हमारे दस
प्रतिशत तक भी नहीं
पहुंचे हो!



आदिमानव जैसे प्राणी हमारे
अस्तित्व के दौरान भी थे। और हम अन्य प्रजातियों
से ज्यादा उनका ध्यान रखते थे। क्योंकि उनमें हमें
बुद्धिमत्ता की झलक दिखाई देती थी। हम उन्हें
अपनी प्रगति में आगीदार बनाना चाहते थे।

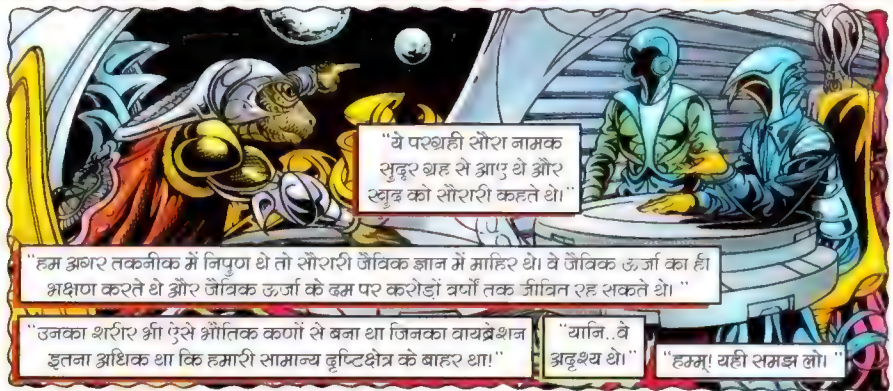


"इसी दौरान एक दिन हमारे पास एक संदेश आया। संदेश
सुदूर तारामंडल के प्राणियों से आया था। उनके सूर्य का ईंधन
समाप्त हो रहा था और वे नष्ट घर की खोज में थे।"



"हमारा ध्येय सिर्फ पृथ्वी ही नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की हर प्रजाति को पनपने का अवसर देना था। ताकि प्रकृति की कोई भी रचना विनष्ट न हो पाए।"

"उस वक्त मंगल ग्रह की तरह, पृथ्वी को दो चंद्रमा थे। एक बड़ा और दूसरा उससे छोटा। हमने उनकी एक टीम को छोटे चांद पर रहने की इजाजत दे दी ताकि वे इस क्षेत्र में रहकर अपने रहने योग्य किसी नए ग्रह की तलाश कर सकें।"



"वे परेश्वही सौरा नामक सुदूर ग्रह से आए थे और खुद को सौरारी कहते थे।"

"हम अगर तकनीक में निपूण थे तो सौरारी जैविक ज्ञान में माहिर थे। वे जैविक ऊर्जा का ही भक्षण करते थे और जैविक ऊर्जा के दम पर करोड़ों वर्षों तक जीवन रह सकते थे।"

"उनका शरीर भी ऐसे भौतिक कणों से बना था जिनका वायुब्रेशन इतना अधिक था कि हमारी सामान्य दृष्टिक्षेत्र के बाहर था।"

"यानी, वे अदृश्य थे।"

"हम्म! यही समझ लो।"



"लेकिन जैसे-जैसे सदियों बीतती गईं वैसे-वैसे सौरारियों की वास्तविक मंशा सामने आने लगी।"

"उनका ईरादा पृथ्वी पर पनप रहे जैविक जीवन को बायोएनर्जी में बदलकर अपना अोजन बनाना था।"

"लेकिन हमारे रहते ऐसा कर पाना मुश्किल था।"

"वे जानते थे कि वे हमारी तकनीक के सामने नहीं टिक सकते। इसीलिए उन्होंने हमें रास्ते से हटाने के लिए एक विचित्र योजना बनाई।"

"उन्होंने बायोरोबोट्स बनाए।"

"...और उन बायो रोबोट्स को उस आदिमानव आबादी में मिला दिया जिसका हम संरक्षण करते थे।"

"उन्होंने सैकड़ों वर्षों तक हमारी तकनीकों को सीखा, हमारी कमजोरियों को समझा और फिर छुप-छुपकर हमारे श्रुतों का जैविक हथियारों से शकाया करना शुरू कर दिया।"

"वही जैविक हथियार जिन्हें तुम आज शायद 'वायरस' और 'बैक्टीरिया' कहते हो!"

"पर हम तो जानते हैं कि डायनोसोर करोड़ों की तादाद में थे, और पूरी पृथ्वी पर थे! इतनों को मारना तो असंभव था!"

"सही जानते हो तुम! पर हर डायनोसोर प्रजाति विकसित नहीं थी। हममें से ख़ास प्रजातियों के कुछ लाख डायनोसोर ही बचिमान थे!"

"सिर्फ वे ही सार्रासिया के रोबोट्स का निशाना थे।"

"सुआरा उन बायो रोबोट्स का लीडर था। हम डायनोसोर प्रजाति पर आई इस विपदा का कारण दुंदने में जुट गए! और सुआरा उसमें हमारी मदद करने लगा।"

"हम अंजाने में दुश्मन को अपना राज बता रहे थे और वे उसकी काट दूँद रहे थे!"

"देखते ही देखते कुछ ही वर्षों में हमारी आबादी आधी रह गई थी!"

"लेकिन एक दिन हमें कारण का पता चल ही गया।"

"सोसोरियों की मददारी सामने आ गई और हमने चांद पर हमले की तैयारी शुरू कर दी।"

"हमारी योजना का पता चलते ही उन्होंने अपने बायोरोबोट्स को सुघुप्तावस्था में भेज दिया। और फिर उन्होंने एक महाभयंकर चाल चली।"

"सीधी लड़ाई में हम उनका समूल नाश कर देते, इसीलिए उन्होंने आनन-फानन में अपनी बस्तियों को दूसरे बड़े चांद पर स्थानांतरित कर लिया और छोटे चांद को पृथ्वी से टकराने की तैयारी करने लगे। उस टक्कर से हमारा अस्तित्व मिट जाना निश्चित था।"

"पर यह टक्कर सुआरा जैसे अन्य बायो रोबोट्स के लिए भी खतरा हो सकती थी। सौरारियों ने अपने रोबोट्स को नजर अंदाज किया था और यह समझ में आते ही सुआरा बागी हो गया। वह सीधा मेरे पास आया और उसने मुझे सौरारियों की यह योजना बताई।"

"चांद को तो रोकने की कोशिश हम कर सकते थे। सफल भी हो सकते थे और असफल भी। लेकिन ऐसे में किसी भी सौरारी को पृथ्वी पर आने से रोकना जरूरी था।"



"समय कम था और हम जानते थे कि सौरारी हम पर नजर रखे हुए थे। काम को अंजाम देने का एक ही तरीका था। सुआरा।"

"सौरारी नहीं जानते थे कि सुआरा पाला बदल चुका है।"



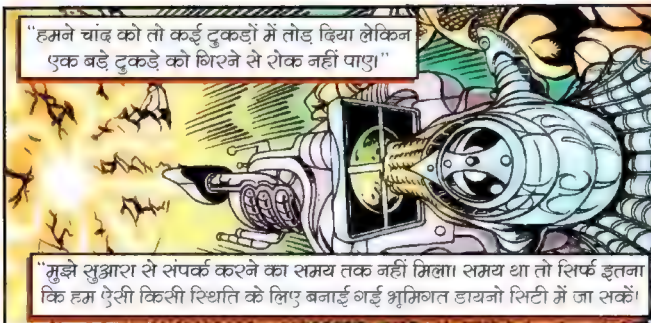
"हमने एक सुदूर द्वीप पर, वही जिसको तुम नागद्वीप कहते हो, एक खास कंट्रोल सेंटर बनाया। यह कंट्रोल सेंटर पृथ्वी के चारों तरफ एक द्रव्य कवच बिछाने के लिए था। इस कवच के ऊर्जा के खास वायब्रेशन सौरारियों के शरीर-कणों के वायब्रेशन की काट थे।"



"सीधे शब्दों में कहा जाए तो, हर चीज इस कवच के पार जा सकती थी, सिवाय सौरारियों के।"

"इस कवच के रहते सौरारी पृथ्वी पर कभी नहीं आ सकते थे। इस दौरान हम उस चांद को रोकने की तैयारी में लगे थे। जिसने पृथ्वी की तरफ गिरना शुरू कर दिया था।"

"और सुआरा कवच को एकटीवेट करने की तैयारी में जुट गया। उस कवच को जिसको हटाने का कोड था तो वह जानता था या मैं।"

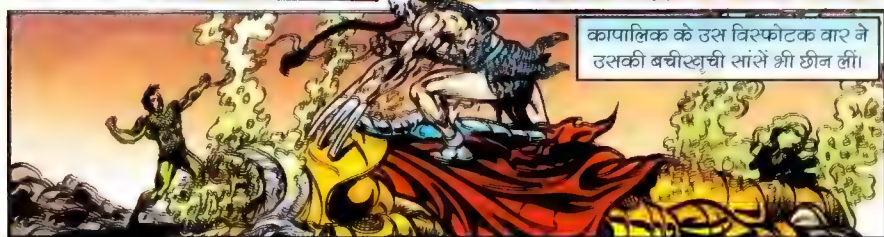


"हमने चांद को तो कई टुकड़ों में तोड़ दिया लेकिन एक बड़े टुकड़े को गिरने से रोक नहीं पाए।"

"मुझे सुआरा से संपर्क करने का समय तक नहीं मिला। समय था तो सिर्फ इतना कि हम ऐसी किसी स्थिति के लिए बनाई गई भूमिगत डायनो सिटी में जा सकें।"



"जिसका पता सिर्फ सुआरा को था।"





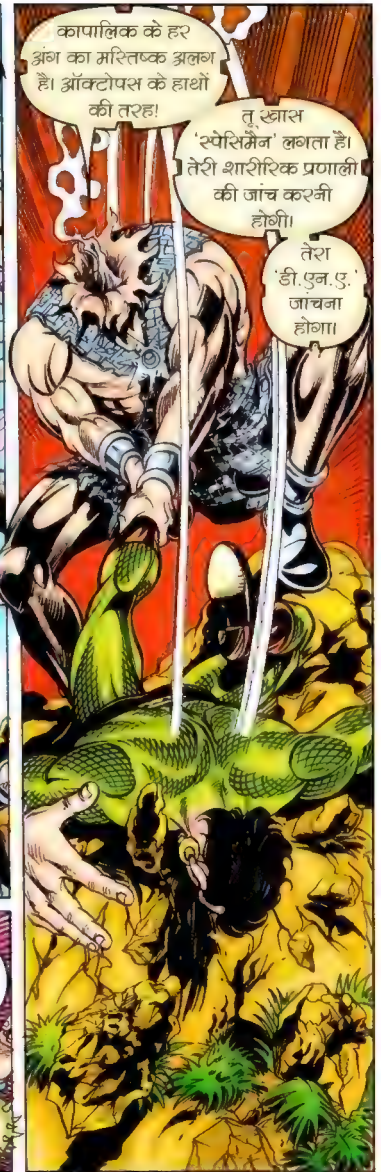
अब भारी नागराज की थी।
नागराज कमजोर अवश्य था...



...मगर बेबस नहीं।



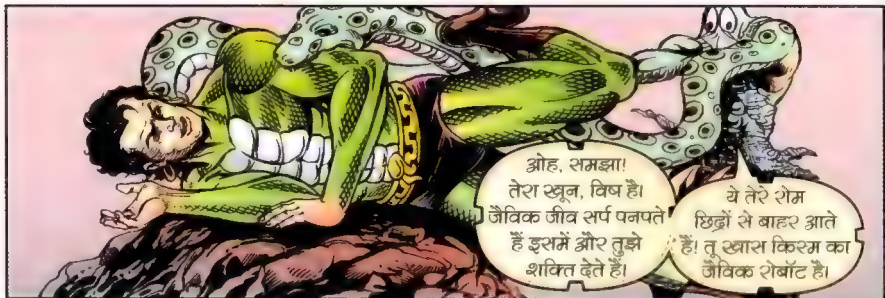
कितनी श्री
शक्तियां शरीर में भारी
हों, दिमाग स्वतंत्र तो
सब स्वतंत्र!



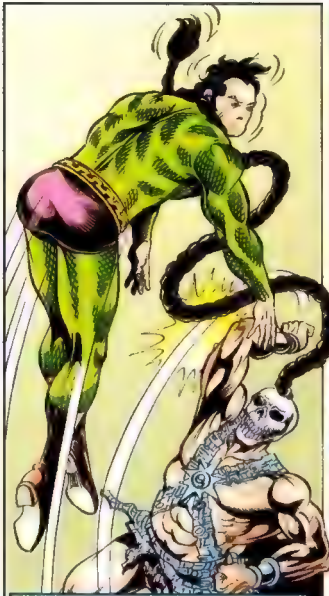
कापालिक के हर
अंग का मरिचक अलग
है। ऑक्टोपस के हाथों
की तरह!

तु ख्यास
'स्पेसमैन' लगता है।
तेरी शारीरिक प्रणाली
की जांच करनी
होगी।

तेरा
'डी.एन.ए.'
जांचना
होगा।







नागराज अब न फुंकार छोड़ सकता था और न ही सर्प वार कर सकता था। न देख सकता था, न सुन सकता था।

और न ही कापालिक के भूस्खलन जैसे लगातार बरसते शीपण वारों को झेल सकता था।



उसके शरीर के क्षतिग्रस्त अंगों से होता रक्तस्राव उसके अंदरूनी अंगों को उष्ण कर रहा था।

कुछ ही पलों के बाद नागराज की सांसें थम चुकी थीं और उसका शरीर निश्चल पड़ चुका था।

एक समय में मृत्यु को भी चुनौती देकर जीतने वाला महानायक आज स्वयं उसके साथ चलने को तैयार था।



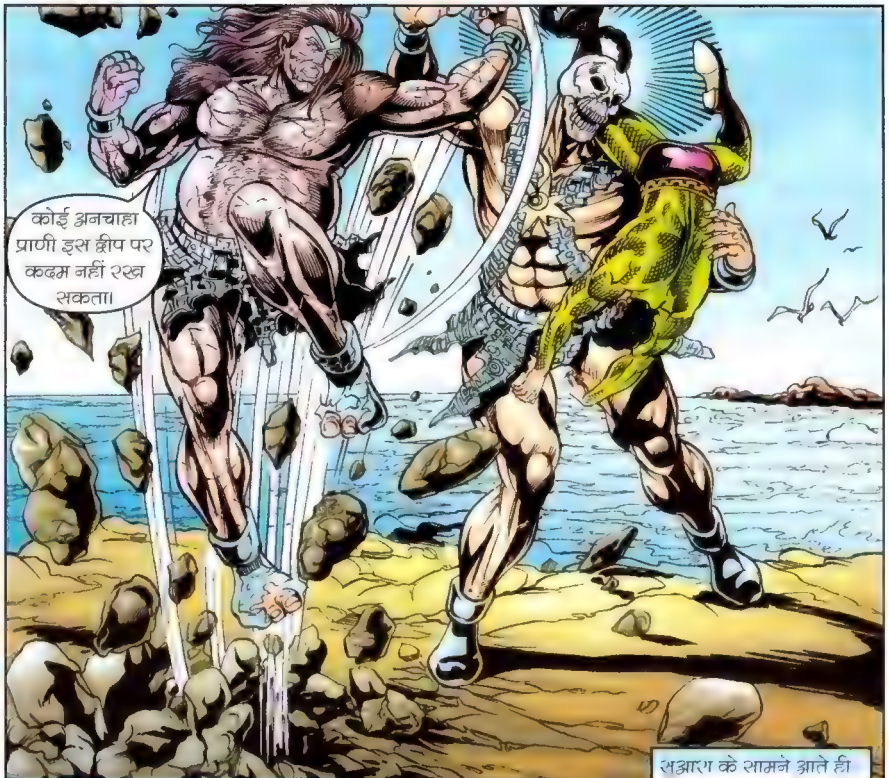
किसी मदद की कोई उम्मीद नहीं थी। क्योंकि इस शीपण आपदा का सामना कर सकने नायक सारे स्तंभ ढह चके थे।



सिवाय एक अंतिम सहारे के।

सुआरा रक्षक है इस शीप का! और सुआरा के रहते...





कोई अनचाहा
प्राणी इस क्षीप पर
कदम नहीं रख
सकता।

सञ्चार के सामने आते ही

पृथ्वी के आभामंडल में, सुरक्षा कवच के
पार तेर रहे सौराश्रियों की बांछें खिल गई।



सञ्चार उसने...
उसने अपनी जीवित
प्रतिमा बना रखी
थी!!

और... और
सञ्चार की जो
मुप्त रसमिति थी, वह
प्रतिमा के दिमाग में
फीड है। जस्स
कोड भी उसी
में होंगे।

इसके मरिचक
को कंट्रोल करो। रि-
बूट करो! हमें वह
कोड चाहिए।

और कापालिक
को डीएक्टिवेट कर दो।
कहीं वह प्रतिमा को कोई
नुकसान न पहुंचाए।

उसकी
संभावना कम
दिखती है। क्योंकि
फिलहाल

"सुझारा की प्रतिमा कापालिक पर भारी पड़ रही है। वह कापालिक जैसे बायोरोबॉट्स की हर कमजोरी को जानता है।"

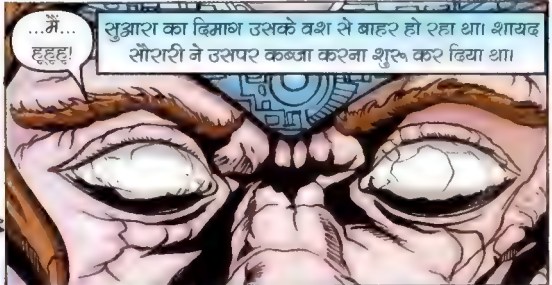
"और कापालिक का कभी भी अपने बराबर वालों से पाला नहीं पड़ा है।"

तेरी सबसे बड़ी शक्ति, रीजैनेरेशन उसकी कोडिंग को की शक्ति है।

पहले मैं उसकी कोडिंग को ब्रेक करूँगा!

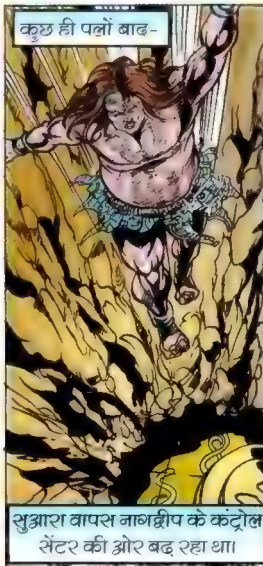


और उसके बाद तेरी बोटी-बोटी करूँगा! और फिर...



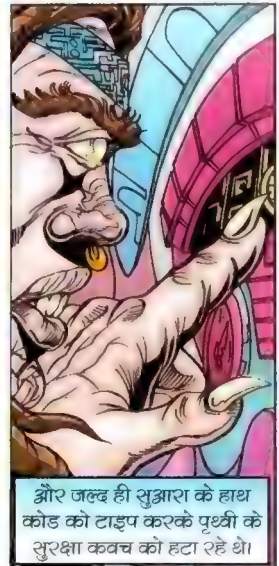
...मैं... हूँ...

सुझारा का डिमांड उसके वश से बाहर हो रहा था। शायद सौरारी ने उसपर कब्जा करना शुरू कर दिया था।



कुछ ही पलों बाद-

सुझारा वापस नागद्वीप के कंट्रोल सेंटर की ओर बढ़ रहा था।



और जल्द ही सुझारा के हाथ कोड को टाइप करके पृथ्वी के सुरक्षा कवच को हटा रहे थे।

और करोड़ों वर्षों के बाद सौरारियों की पृथ्वी पर कदम रखने का मौका मिल रहा था।

आह! कितना अच्छा लग रहा है फिर से पृथ्वी के बायो रिफरर में आकर!

अब यह ग्रह पूरी तरह से हमारा है। अब यह हमें करोड़ों वर्षों का भोजन उपलब्ध कराएगा!

मालूम मत कर! इन्हें स्थान के लिए बहुत समय है।

अभी हमें अपने ग्रह के भूखे सौरारियों को संदेश भी भेजना है और नाग-द्वीप के उस कंट्रोल को भी नष्ट करना है...

प्रतिमा सुआरा को हम आदेश दे चुके हैं। वह हमारा इंतजार कर रहा है।

जिस खतरे को रोकने में ड्रैगन किंग ने अपनी प्रजाति की जान दांव पर लगा दी, वह करोड़ों वर्षों का प्रयास व्यर्थ हो गया था! सौरारियों की शक्ति अब अजेय थी!

मानवों की बस्ती अब पोल्ट्री फॉर्म से ज्यादा कुछ नहीं थी!

आह! बड़ी हसरत थी तुझे पास से देखने की! ड्रैगन किंग के बाद एक तू ही दिखा था, नागराज, जो शायद हमारे सपने चूर कर सकता था!

पर आखिरकार तू खुद ही चूर-चूर हो गया! अगर तू जहरीला न होता तो हमारा पहला भोजन तू ही बनता!

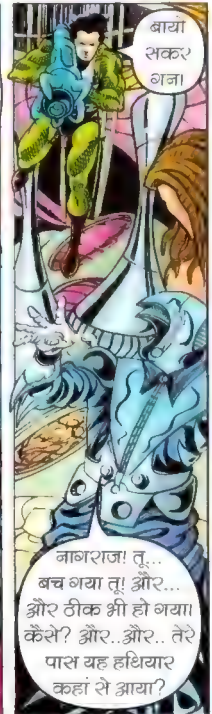
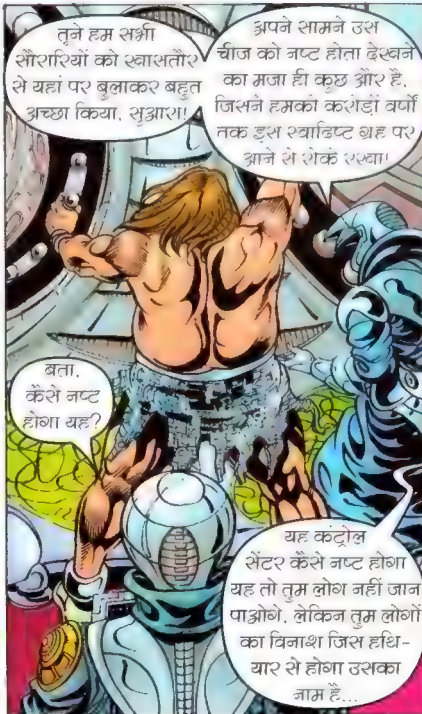
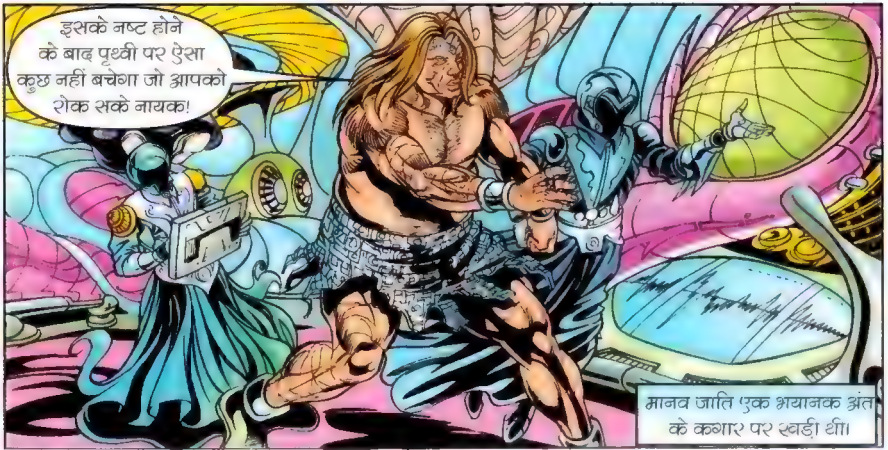
लेकिन मरते-मरते दिल छोटा न कर! हमने तुम मानवों का काफी भला भी किया है।

बाँयो रोबोट्स बना कर आदिमानवों के बीच हमने भोजे तो डायनासोरस को खत्म करने के लिए थे। पर इन्होंने मानवों के बीच में रहकर उनसे संतानें भी पैदा की और ऐसे उनका डी.एन.ए. उन आदिमानवों के वंशजों में भी पहुंच गया!

उसके बाद ही मानवों ने इतनी तेजी से प्रगति की! बोलना सीखा और सोचना सीखा!

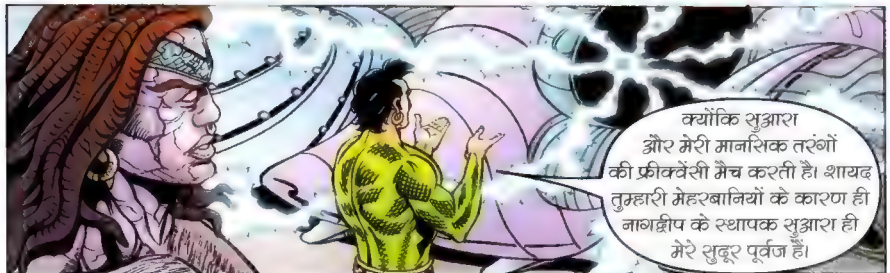
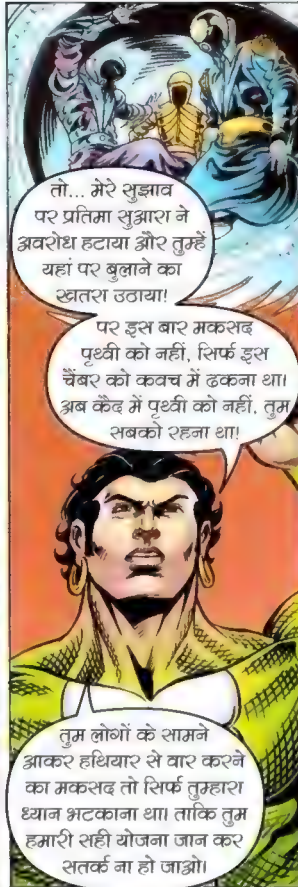
अब चलें नायक! नागद्वीप के कंट्रोल सेंटर को नष्ट भी करना है!

उसमें डेर नहीं होनी चाहिए!











आप वास्तव में सिर्फ मेरे या नागद्वीप के ही नहीं, बल्कि पूरी पृथ्वी के रक्षक... अरे! यह क्या?



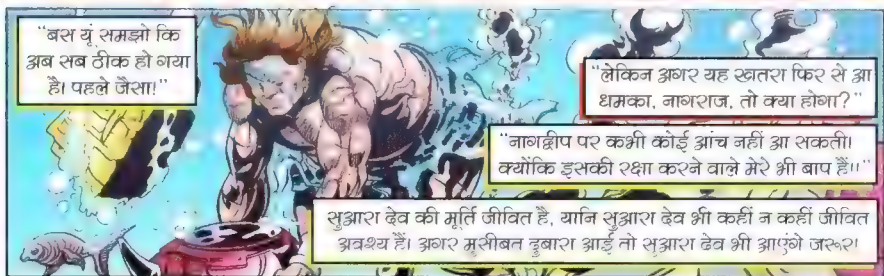
ये पूरा सिस्टम सेल्फ-डिस्ट्रक्ट हो रहा है। मुझे.. मुझे बाहर निकलना होगा!



ओह! शुक्र है कि आप सब लोग ठीक-ठाक हैं!

ठीक तो नहीं हैं, पर हो जाएंगे। लेकिन.. यह सब था क्या? क्या हुआ है नागद्वीप पर?

नागद्वीप का इतिहास फिर से जिंदा हो गया था, विसर्पी।



"बस यूं समझो कि अब सब ठीक हो गया है। पहले जैसा!"

"लेकिन अगर यह खतरा फिर से आ धमका, नागराज, तो क्या होगा?"

"नागद्वीप पर कभी कोई आंच नहीं आ सकती। क्योंकि इसकी रक्षा करने वाले मेरे भी बाप हैं!"

सुआरा देव की मूर्ति जीवित है, यानि सुआरा देव भी कहीं न कहीं जीवित अवश्य है। अगर मसीबन दुबारा आई तो सुआरा देव भी आपुणे जरूर।

विश्व अपराध जगत में आज अपने सबसे बड़े हथियार की नीलामी करेगा कौटिल्य नागमणि।



नृपति भूखला

जिसे आपने साम्राज्य का सिपहसालार बनाना चाहता था मैं, वो मेरा गुलाम बन कर नीलाम होगा...

...मेरे विरुद्ध जाने की सजा में भुगतना होगा इसे ये...

HEMANT
EESHWAR GRET
ISHAN

Join our facebook page

facebook

<http://www.facebook.com/rajcomics>

नरक देश

नरक नाशक उत्पत्ति शृंखला भाग-3

राज कॉमिक्स में नरक नाशक एवं नरक नियति के बाद नरक नाशक नागराज का एक और रोमांचक विशेषांक।



युग धरित्री अस्यः

सर्वनायक प्रतियोगिता पहुंच चुकी है उस चरण पर जहां यणप्रायक धारण करेंगे प्रतिद्वंद्वी की शक्तियां और दंड करेंगे अपने ही दल के विरुद्ध। विजेता बनेगा वही जो करेगा अपने दल का....

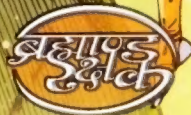
सर्वसंहार

चतुर्थ खंड

सर्वनायक

एक युग

एक युद्ध



Join our facebook page

facebook

<http://www.facebook.com/rajcomics>

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इण्डिया के एक रेगिस्तानी बीहड़ में दफन किया गया एक ऐसा खतरनाक आविष्कार जो सिर्फ मानव जाति ही नहीं बल्कि पूरी पृथ्वी का अस्तित्व मिटा सकता था।



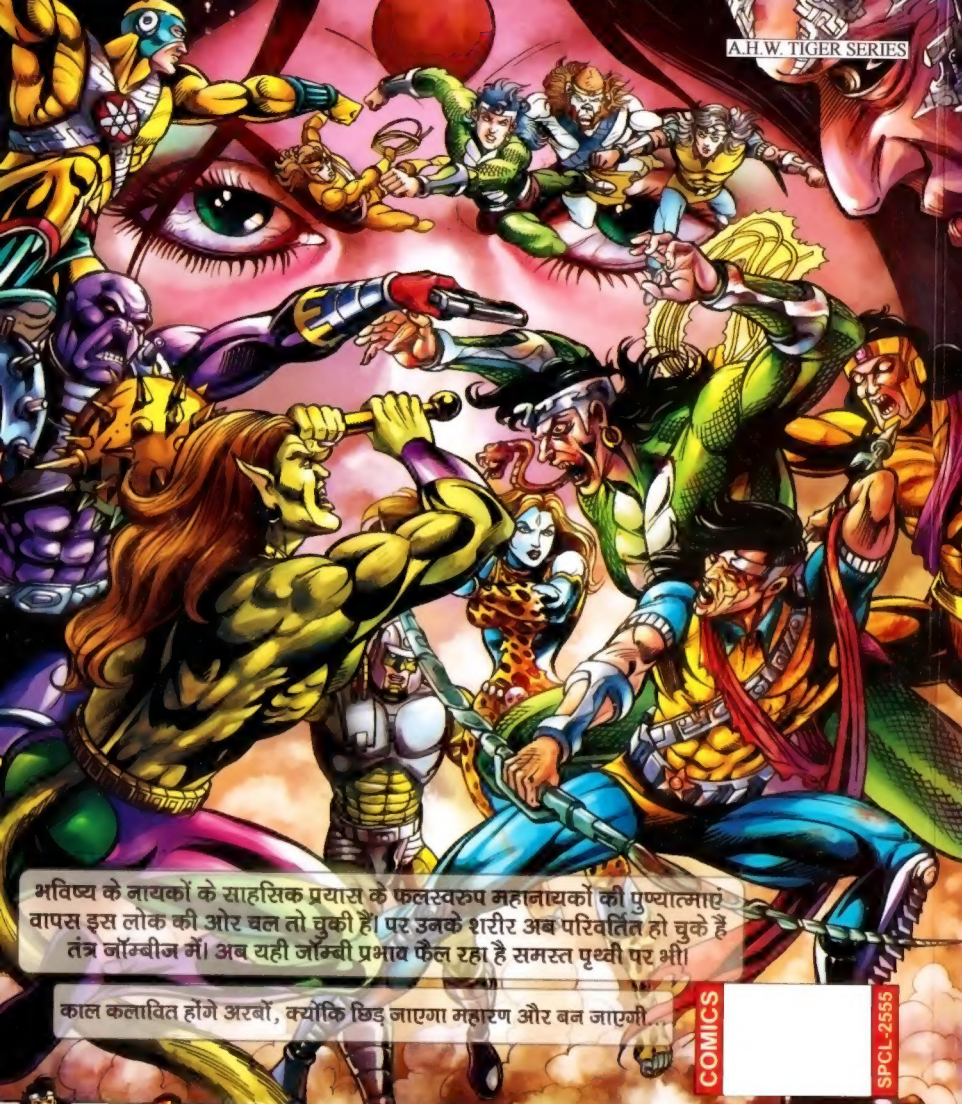
इस घटना के लगभग सात दशक बाद देश के सबसे विकसित मेट्रोपोलिटन राजनगर में उठा है एक जलजला जिसकी चपेट में धधक रहा है राजनगर और...

सुपर कमांडो
ध्रुव

राजनगर रक्षक

INSPECTOR
STEEL

सुपर कमांडो ध्रुव और इंस्पेक्टर स्टील का हाई-टेक सस्पेंस और एक्शन फिल्ड विशेषांक।



भविष्य के नायकों के साहसिक प्रयास के फलस्वरूप महानायकों की पुण्यात्माएँ वापस इस लोक की ओर चल तो चुकी हैं। पर उनके शरीर अब परिवर्तित हो चुके हैं तंत्र जॉम्बीज में। अब यही जॉम्बी प्रभाव फैल रहा है समस्त पृथ्वी पर भी।

काल कलावित होंगे अरबों, क्योंकि छिड़ जाएगा महारण और बन जाएगी...

COMICS

SPCL-2555

महा नागायण

राज कॉमिक्स में जीवन-मृत्यु के बीच के महायुद्ध को चित्रित करती अदभुत महागाथा।

